वाक्यसंसार

वाचन तथा लेखन कौशल्य

HLP Project S&T Mission Mode Government Of India
Department of Speech-Language Pathology
AYJNIHH, Bandra MUMBAI 400 050.

ACKNOWLEDGMENT

A systematic training material easily accessible to teachers and parents of the language disordered children, a cherished distant dream has become a reality. Thanks to Science and Technology Mission Mode, Govt. of India for helping us realize this, by providing financial assistance. Their regular review and suggestions enabled us critically evaluate the material.

We are indebted to Shri Rangasayee, Director, A.Y.J.N.I.H.H. for motivating us to take up this comprehensive project and providing continuous support and guidance at every stage of the project.

Such extensive material needed critical evaluation for which we are grateful to Dr. Vijayalakshmi Basavraj, Dy. Director (Tech.), A.Y.J.N.I.H.H. who gave invaluable suggestions and support.

We highly appreciate and thank Dr. Geetha Mukundan, Reader & Head, Department of Speech-Language Pathology, A.Y.J.N.I.H.H. for providing departmental facilities and steady support throughout the project. Our special thanks to Mrs. Varsha Gathoo, Reader and Head, Department of Education, A.Y.J.N.I.H.H., for the feedback and suggestions which helped us to improve upon our earlier drafts.

We thank Dr. Sureshkumar, Ex-Director of Kendriya Hindi Sansthan, Agra and Dr. Medha Karbhari-Adhyaru for their guidance in finalizing the list of vocabulary of the books.

We appreciate the co-operative and unconditional support provided by the respective Principals and Teachers of the following Special Schools for The Hearing Impaired in Delhi and Mumbai, who in spite of their busy schedule dedicated their valuable time for field testing the material without which the material would not have taken this shape.

Asha Special School, New Delhi, Association of Welfare of Handicap, Faridabad, New Delhi, Awaz Special School for Deaf, New Delhi, Koshish School for Deaf, Malad, Mumbai, M.P.K, Welfare Centre for Hearing and Speech Handicapped, Harayana, Pragati School for Deaf, Dadar, Mumbai, Premalabai Chavan School for Deaf, New Delhi, Rochiram Thandhani School for Hearing Handicapped, Chembur, Mumbai, Shivaji Park School for the Deaf, Mahim, Mumbai, Shruti School for Deaf, Juhu, Mumbai, Utkarsha School for the Deaf, Vile Parle, Mumbai, Welfare Center for Impaired, Sonepat, New Delhi, Welfare Centre for Hearing and Speech Handicapped, Gurgaon, New Delhi.

The parents of children with hearing impairment provided us with positive feedback on this material and stressed the utility and need for such material. We are highly indebted to them. A heart felt thanks to them.

Development of the books would have been incomplete without the support of the proofreaders. We take this opportunity to thank Mrs. Namrata Pawar, Hindi Section, A.Y.J.N.I.H.H. and Mr. Chandravir Banshidhar Yadav for proof reading the material.

We acknowledge Prof. J.C. Sharma for helping us with statistical analysis.

We are grateful to Mrs. Meenal Umrao and Mrs. Nayna Shinde for their umatched consistent and robust hardwork and sometimes working during odd hours to catch up with the project work.

The prompt support always provided by Mr. Nitin Warekar, Hardware Engineer, Establishment, Accounts and Hindi Section is greatly valued.

Usha Dalvi
Principal Investigator

Sadhana Relekar
Co Investigator

PROJECT DETAILS

Funded by : S & T mission mode, Government of India.

Conducted by : Department of Speech-Language Pathology, Ali Yavar Jung National Institute for the Hearing Handicapped, Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India, Bandra,, Mumbai - 50.

Project Group:

- Principal Investigator : Mrs. Usha Dalvi (Lecturer, A.Y.J.N.I.H.H.)
- Co-Investigator : Ms. Sadhana Relekar (Lecturer, A.Y.J.N.I.H.H.)

Research Team:

- Linguist : Dr. Rita Mathur
- Special Educator : Mrs. Bindiya Kamble
- Special Educator : Mrs. Sneha Tambe

Illustrations:

- Commercial Artist : Ms. Leena Teli
  Ms. Varuna Naik

Layout and Visualization : Sun Graphics

Copyright:

All rights reserved. No part of this book may be reproduced stored in retrieval system, or transmitted in any means, electronic mechanical, photocopying, recorded or otherwise, without written permission of ....

दो शब्द शिक्षकों एवम् अभिभावकों से

श्रवण बाधित बच्चों में भाषा ज्ञान के संवर्धन और परिवर्धन के लिए निरंतर प्रयास किए जाते रहे हैं। परंतु इन प्रयासों की जानकारी केवल कुछ ही लोगों को है जो इस समस्या के प्रति जागरुक हैं। यह भी देखने में आया है कि श्रवण बाधित बच्चों में बोलने की क्षमता व भाषिक विकास के लिए आवश्यक सामग्री का भी अभाव है। ये बच्चे संपूर्ण रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से सामान्य होते हैं, परंतु केवल श्रवण विकलांगता के कारण भाषिक ज्ञान से वंचित रह जाते हैं। इस कमी को पूरा करने के लिये ही यह पुस्तक मालिका प्रस्तुत की जा रही है। इस पुस्तक मालिका में क्रमिक रूप से भाषा के जटिल रूपों को सरल चित्रों व सरल लेखन के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक मालिका तीन वर्गों में विभाजित है। प्रथम - वर्ण संसार, द्वितीय - शब्द संसार तथा तृतीय - वाक्य संसार। जैसा कि नाम से विदित है, यह पुस्तकमालिका क्रमश: वर्णमाला, शब्द संरचना और वाक्य विन्यास का ज्ञान कराती है। भाषा का ज्ञान कराने वाली पुस्तकें बहुत सी हैं जो हिंदी की सभी व्याकरणिक कोटियों का ज्ञान कराती हैं, किंतु सभी पुस्तकें पाठ्यक्रम के अनुसार निर्मित हैं और सामान्य विद्यार्थी के लिए लाभप्रद भी है, पर ये श्रवण बाधित बच्चे अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं के कारण उन पुस्तकों का लाभ नहीं उठा पाते। श्रवण विकलांगता के कारण वे प्रायः भाषा सीखने और उसके बहुत से प्रयोगों, उदाहरण स्वरूप भाषा के अलंकारिक प्रयोग से अनभिज्ञ रह जाते हैं। अत: इन बच्चों की शब्द आधारित भाषा सीखने की असमर्थता को ध्यान में रखते हुए ही इस पुस्तक मालिका की रचना की गई है।

'वर्ण संसार' की पुस्तिकाएँ वर्णों के आकार और रूप का ज्ञान कराती हैं। 'शब्द संसार' की पुस्तिकाएँ शब्दों के विभिन्न प्रयोगों और उनके व्यापक अर्थ का परिवर्धन कराती हैं तथा 'वाक्य संसार' की पुस्तिकाएँ विभिन्न वाक्यों की संरचना एवं हिंदी व्याकरण की जटिलताओं को सरल रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास करती हैं। इस पुस्तक मालिका से दो वर्ष से आठ वर्ष के आयु वर्ग के श्रवण बाधित बच्चों में भाषा विकास संपूर्ण रूपसे हो जाएगा, यह समझना सही नहीं होगा। परंतु इस पुस्तक मालिका का प्रयोग इन बच्चों के अध्यापकों, अभिभावकों एवं अन्य वे सभी जो भाषा अल्पता एवं शुद्धता की समस्या को सुलझाना चाहते हैं, उनका पथ एवं दिशा निश्चित करने में सहायक होगी। साथ ही यह पुस्तकमालिका सभी बच्चों में भाषा अर्जन, बोलना, वाचन और लेखन क्षमताओं का विकास करने में भी सहायक सिद्ध होगी। कृपया इस विषय में अपने अनुभव हमें अवश्य बताएँ। इस पुस्तक मालिका को सहायक सामग्री के रूप में और अधिक परिवर्धित एवं उपयोगी करने की दिशा में आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

धन्यवाद ...

वाचन और लेखन कौशल

किताब पढ़ना मतलब मुद्रित-लिखित शब्दों का अर्थ समझना। वाक्यों को बिना समझे पढ़ना अर्थहीन होता है। अगर बच्चा सरलता-पूर्वक और सहजता से किताब पढ़ लेता है, तो इसका अर्थ यह नहीं, कि वह लिखे हुए सारे शब्दों का अर्थ समझ पाता है। शुरु-शुरु में अधिकतर बच्चे पढ़ लेते हैं, लेकिन वे ऊपरी तौर पर पढ़ते हैं, जहाँ उन्हें पढ़े हुए सभी शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आता है। पठन अच्छा होने के लिए बच्चों की शब्दज्ञान संपत्ति अधिक होनी चाहिए। इसके लिए सिर्फ अभ्यासक्रम में होने वाली किताबें, पाठ पढ़ना काफी नहीं होता। इसलिए बच्चों का उनकी उम्र और रुचि के मुताबिक अतिरिक्त साहित्य पढ़ना भी बहुत जरुरी होता है, जिससे उनकी भाषा तथा शब्द के ज्ञान में बढ़ोत्तरी हो सके। इसके लिए कहानियों की किताबें, व्यंगचित्रों वाली छोटी छोटी हास्यात्मक किताबें, सामान्य ज्ञान बढ़ाने वाली किताबें तथा समाचार-पत्र पढ़ना बहुत जरुरी है। अब यहाँ हमारे सामने एक प्रश्न आता है कि हमारे श्रवणबाधित बच्चे जब शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए, सरल भाषा में समझाए गए पाठ ही ठीक तरह से पढ़ नहीं पाते, या याद नहीं रख पाते, तो अतिरिक्त पठन (अपठित परिच्छेद, कहानियाँ) कैसे कर पाएंगे और समझ पाएंगे ?

यहाँ हम सब को एक बात तो माननी पड़ेगी, कि हम बच्चों को पाठ सरल से सरलतम भाषा में अनुकूलित करके, हर-एक शब्द का अर्थ बताकर पढ़ाते हैं। इससे वे बहुत हद तक शिक्षकों अथवा अभिभावकों पर निर्भर हो जाते हैं। इसी कारण स्कूल की पढ़ाई के 10 वी

कक्षा में भी ये बच्चे खुद से अपठित परिच्छेद, समाचार इत्यादि समझने में कठिनाई महसूस करते हैं। इससे यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि बच्चे रेल या बस में सफर करते समय, यहाँ-वहाँ लिखी सूचनाएँ, निर्देश पढ़ने में और उनको समझने में भी असमर्थ रहते हैं अथवा वह पढ़ने में रुचि भी नहीं दिखाते। इसलिए हमारी यह कोशिश होनी चाहिए कि उनके द्वारा देखे गए या उनकी नजर में आए हुए सारे लिखित शब्द उनसे पढ़े जाए और समझे जाए। इसी तरह धीरे-धीरे उनमें अतिरिक्त पठन की आदत डालनी चाहिए। इन बच्चों के लेखन कौशल के बारे में कहा जाए तो वह भी सीमित होता है। वे ज्यादातर छोटे-छोटे, साधारण वाक्यों का प्रयोग करते हैं। व्याकरण की त्रुटियाँ भी होती हैं। उनका लेखन भी अशुध्द होता है। लिखित भाषा में कल्पना, रोचकता की कमी होती है। इस किताब में दी हुई गतिविधियों द्वारा बच्चों का लेखन एवं वाचन कौशल्य बढ़ाने पर अधिकतम महत्व दिया गया है। पठन की रुचि बढ़ाने के लिए शुरू-शुरू में बच्चों को अधिक चित्र वाली बड़े अक्षरों में मुद्रित किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित कीजिए। जो कि हम निम्नलिखित रूप से कर सकते हैं।

वाचन की पूर्व तैयारी के लिए बच्चों को पहले तो चित्रों की मदद से ही अक्षर, शब्द पढ़ने दीजिए। इसमें दिए हुए चित्र से सही चित्र को मिलाना, दिए हुए चित्र में क्या त्रुटियाँ हैं यह ढूँढ़ना, चित्रों को सही क्रम में लगाना, चित्र से अक्षर और फिर शब्द को जोड़ना, जैसे पहले स्तर पर 'आ' से 'आम' का चित्र जोड़ना फिर 'आम' शब्द से 'आम' चित्र जोड़ना, ये सारे उपक्रम बच्चों की वाचन क्षमता तथा वाचन कौशल बढ़ाने में

बहुत मदद करते हैं। अब जब बच्चा वाक्य पढ़ना शुरु करें तब उस छोटे-छोटे मगर रोचक और बड़े अक्षरों मे लिखे परिच्छेद पढ़ने देना चाहिए। शुरु-शुरु में उसे एक ही परिच्छेद बार-बार पढ़ने के लिए कहें। परिच्छेद में चर्चित किया गया विषय समझें। किस विषय पर परिच्छेद में लिखा गया है वह समझने की क़ोशिश करें। मतलब जब बच्चा वह परिच्छेद पढ़ लेगा तब उसे छोटे-छोटे प्रश्न पूछिए। जैसे कौओ की कहानी पढ़ते समय पहले-पहले यह परिच्छेद किसके बारे में है, यह पूछने के बजाय किस पंछी के बारे में इस परिच्छेद में बताया गया है यह पूछें। ऐसे बताने पर भी यदि बच्चा न समझता हो तो जिस वाक्य में पंछी का नाम आया हो उस वाक्य का नंबर बताइए। जैसे, देखो परिच्छेद में से चौथा वाक्य पढ़ो। (इस तरह के छोटे-छोटे प्रश्न तथा संकेत (क्ल्यू) देने से बच्चों को परिच्छेद और अच्छी तरह समझ में आएगा। बच्चों को समझाएं कि पढ़ते समय बीच में एक-दो शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आता,तो रुकिए नहीं। बल्कि उस शब्द के आगे-पीछे लिखे शब्दों से संदर्भ लगाकर अर्थ जानने का प्रयास करें। अगर फिर भी उस एक शब्द से पूर्ण वाक्य का अर्थ समझ में नहीं आता है तो उस शब्द का अर्थ अभिभावकों से, शिक्षकों से या फिर शब्दकोश से मालूम करने का प्रयत्न करें। इससे बच्चों के पठन कौशल में विकास होगा एवं पठन क्रिया में रूची निर्माण होगी। रूची निर्माण होने पर विविध प्रकार की किताबें, बच्चों की पत्रिका एवं समाचार पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित कीजिए। पढ़ने के कौशल के साथ-साथ बच्चों के लेखन कौशल पर भी ध्यान देना चाहिए।

वाचन तथा लेखन कौशल

पाठ्यसूची

क्रमांक	पाठ	पृष्ठ क्रमांक
पाठ 1	वाचन कौशल	4
पाठ 2	लेखन कौशल	33
पाठ 3	कहानी लेखन	50
पाठ 4	सार लेखन	66

पाठ 1

वाचन कौशल

1.1 कहानी पढ़ना और समझना।

इस पाठ में हम वाचन कौशल सीखेंगे। कहानी पढ़ना यानि पढ़ी हुई कहानी समझना। यहाँ हम निम्नलिखित कहानी के द्वारा कहानी समझने के लिए क्या करना चाहिए यह सीखेंगे।

I) निम्नलिखित कहानी पढ़िए:

एक समय की बात है। गर्मी की दोपहर थी। एक कौआ यहाँ से वहाँ उड़ रहा था। उड़ते-उड़ते वह बहुत थक गया। थकावट के मारे बेचारे का गला सूख रहा था। उसे बहुत प्यास लगी थी।

उसने इधर-उधर देखा। तभी थोड़ी दूर पर उसे एक छोटा सा बर्तन दिखाई दिया। कौए ने बर्तन में झाँक कर देखा, उसमें बहुत थोड़ा पानी था। उसने चोंच से पानी पीने की कोशिश की। लेकिन पानी बहुत थोड़ा होने के कारण चोंच पानी तक नहीं पहुँची।

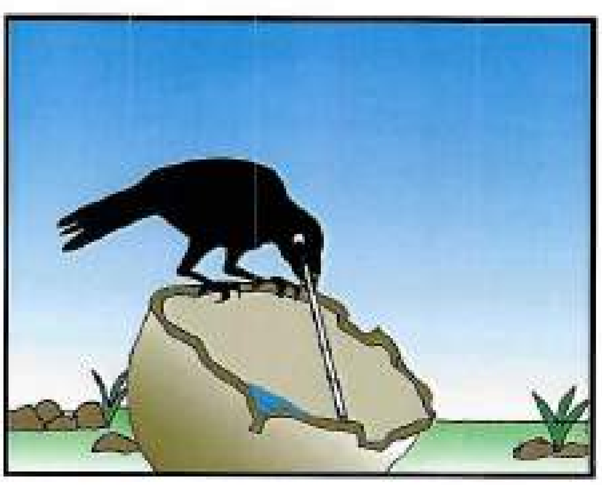

'अब मैं क्या करूँ ?' कौआ सोचने लगा। तभी उसे एक स्ट्रॉ (नली) दिखाई दी। स्ट्रॉ (नली) बर्तन में डालकर कौए ने पानी पी लिया और फिर वह फुर्र से उड़ गया।

कहानी पढ़ते समय हमें कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए।

* कहानी को छोटे-छोटे हिस्से (परिच्छेद) में पढ़िए।

* समझ न आने पर उन्हें फिर से पढ़िए।

* ऐसा हो सकता है कि सभी शब्दों के अर्थ हमें मालूम नहीं होंगे। तब रूकिए नहीं। उस वाक्य के आगे-पीछे आनेवाले वाक्यों को एक साथ पढ़कर समझने की कोशिश कीजिए।

* कहानी के बारे में कुछ प्रश्न अपने आपको पूछकर अर्थ समझने की कोशिश कीजिए।

जैसे-

1) लिखित वाक्यों का अर्थ समझना अर्थात परिच्छेद में किस बारे में बताया है?

- कौआ
- कौए की प्यास
- थका हुआ कौआ
- पानी की तलाश
- होशियार कौआ

2) प्रश्न समझना।

- कौआ क्या तलाश कर रहा था?

- यहाँ से वहाँ कौन उड़ रहा था?

3) पढ़े हुए शब्द का उससे जुड़े शब्दों से संबंध जोड़ना।

जैसे शब्द का समान संबंध

गर्मी = गला सूखना **प्यास** = पानी पीना

4) घटनाओं को क्रम देना।

(1) यहाँ से वहाँ उड़ना.............. (2) थक जाना ....

(3) प्यास लगना .... (4) बर्तन दिखना ....

(5) स्ट्रॉ (नली) लाना .... (6) पानी पीना ....

5) तर्क लगाना।

बर्तन में पानी कम था। इसलिए कौआ पानी नहीं पी सका। अब वह क्या करेगा?

- दूसरी जगह पानी की तलाश करेगा।
- कंकड़ डालकर पानी को ऊपर लाएगा।
- स्ट्रॉ (नली) मिलने पर नली से पानी पीएगा।
- बर्तन के अंदर जाएगा।

6) पढ़े हुए शब्द के संबंधित- समानार्थी, विपरीतार्थी (विरुद्धार्थी) शब्द समझना।

गला सूखना = प्यास लगना

झाँककर देखना। = ________

छोटा x बड़ा = पुरानी x ________

बर्तन के अंदर पानी है कि नहीं यह देखने के लिए कौए ने क्या किया होगा?

कोशिश = प्रयास = प्रयत्न

7) शब्दों का संबंध लगाना।

शब्द सुनकर, पढ़कर उससे जुड़े संबंधित शब्दों के बारे में सोचना।

जैसे 'प्यास' पढ़कर पानी यह संबंधित शब्द ध्यान में आता है, उसी तरह

"भूख" शब्द पढ़कर -खाना

"बैट" शब्द पढ़कर- खेल या बॉल

"पाठशाला" शब्द पढ़कर- पढ़ाई, किताबें, बच्चे, शिक्षक, गृहपाठ ऐसे संबंधित शब्द ध्यान में आते हैं।

8) कहानी/परिच्छेद को शीर्षक देते समय कुछ बातें ध्यान रखिए। शीर्षक कम से कम शब्दों में होना चाहिए। तथा परिच्छेद से, कहानी के पात्र से या घटना से संबंधित होना चाहिए।

- प्यासा कौआ
- चतुर कौआ
- कौआ और पानी

अब कहानी को फिर से पढ़ेंगे और अर्थ जानने की कोशिश करेंगे।

- कहानी का पहला परिच्छेद और एक बार पढ़िए।
- स्वयं से प्रश्न पूछिए और उत्तर जानने की कोशिश कीजिए।

जैसे-

1) इस परिच्छेद का मुख्य पात्र कौन है? - उत्तर - मुख्य पात्र कौआ है।

2) क्या बताया है अथवा क्या हो रहा है? - उत्तर - कौआ प्यासा है यह पता चलता है।

- **इसी तरह दूसरा परिच्छेद पढ़िए और प्रश्न पूछिए और उत्तर जानने की कोशिश कीजिए।**

प्रश्न -कौआ क्या करता है? -उत्तर- प्यास लगने पर वह पानी की तलाश करता है।

प्रश्न-क्या उसे कोई उलझन होती है? -उत्तर- उसे उलझन होती है कि पानी मिलने के बाद भी वह पानी पी नहीं सकता।

- **कभी-कभी वाक्य तो साधारण लगता है मगर उसमें साधारण अर्थ के अलावा कोई अलग संकेत होता है।**

जैसे- कौए ने इधर-उधर देखा इसका मतलब सिर्फ इधर-उधर देखा यह न होकर वह कुछ ढूँढ रहा है यह संकेत किया है।

- **अब इसी तरह अगला परिच्छेद पढ़िए। प्रश्न पूछकर परिच्छेद का अर्थ समझिए।**

प्रश्न-कौए ने अपनी उलझन कैसे सुलझायी? उत्तर- उसने चतुराई से स्ट्रॉ (नली) से पानी पिया।

- **सोचो- यह कहानी आपकी पढ़ी हुई कहानी से कैसे अलग है? आपको कैसे लगा?**

- यह कहानी थोड़ी अलग है। काल्पनिक है। क्योंकि कौआ हमेशा की तरह पानी में पत्थर नहीं ड़ालता पर आधुनिकता से स्ट्रॉ (नली) से पानी पीता है।
- यहाँ हमें पता चलता है कि कहानी में उलझन सुलझाने का प्रयत्न हमारी सोच से विपरीत अथवा अलग हो सकता है।

- **इसलिए जब हम कहानी पढ़ते हैं तब हमें अपने अनुभव से उसे जोड़ने की कोशिश करनी चाहिए। लेखक का, कहानी का उद्देश क्या है, हमें क्या सीख दी है?**

  (यह समझना चाहिए)

जैसे - यहाँ सीख यह है कि - कुछ संकट/परेशानी आए तो हमें उसे सुलझाने की कोशिश करनी चाहिए। कोशिश करने पर संकटों का सामना किया जा सकता है।

- **ध्यान रखें -**

  1) शब्दों का अर्थ जानिए।

  2) संदर्भ जानिए

  3) उसका अर्थ संदर्भ के अनुसार पहचानिए।

  4) परिच्छेद में क्या कहा गया है यह जानिए।

- **कौअे की कहानी फिर से पढ़िए और उस में से आप न समझे हुए कठिन शब्द निकाले और नीचे दिए हुए तरीके से उनके अर्थ जानने की कोशिश करें।**

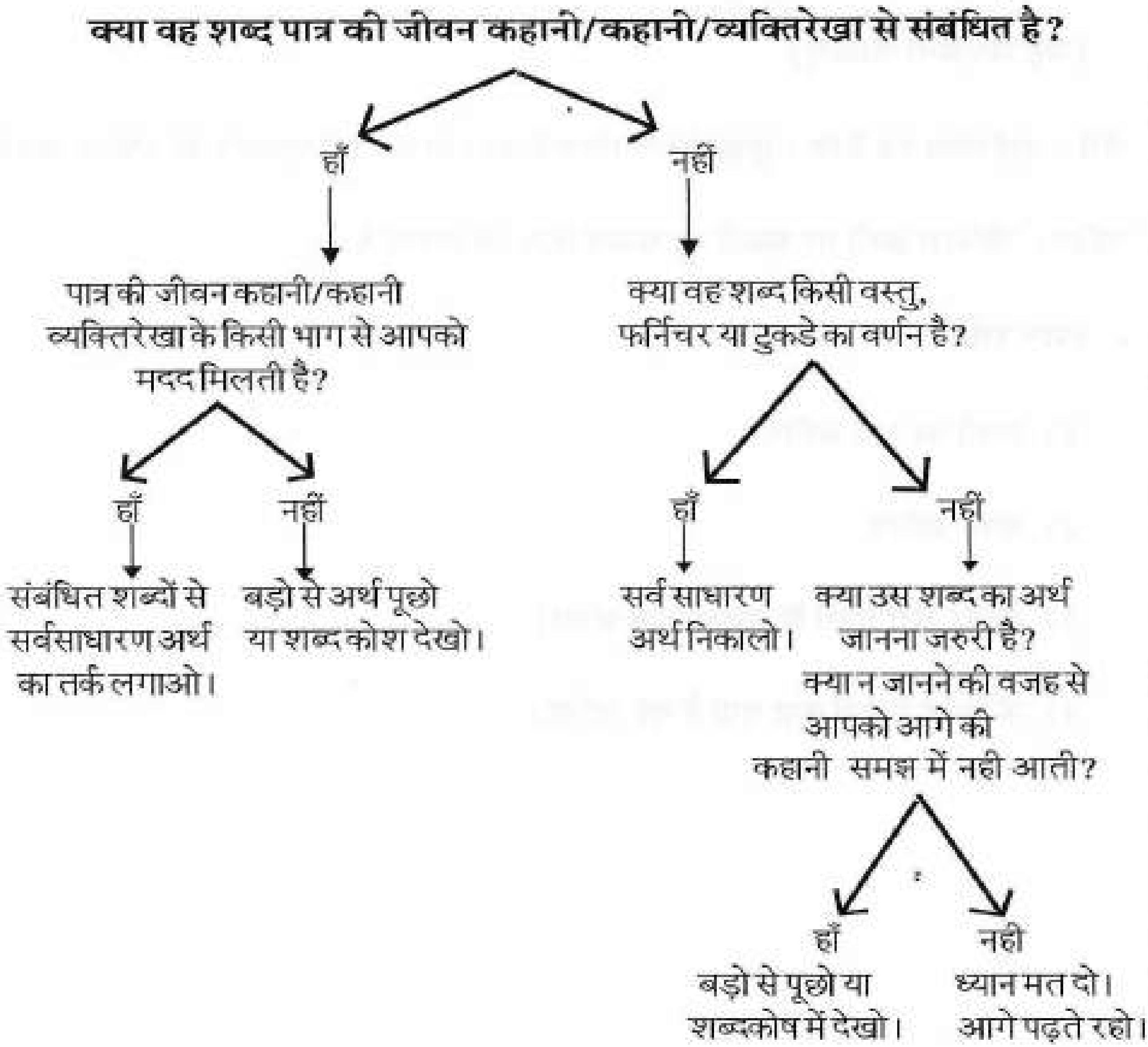

जैसे - परिच्छेद 2 में आया शब्द "झाँक कर देखा"।

- यह शब्द कहानी से संबंधित है? - हाँ।

व्यक्तिरेखा के किसी भाग से आपको मदद मिलती है।

उसे एक बर्तन दिखाई दिया।

कौए ने बर्तन में झाँक कर देखा। इससे हम तर्क लगा सकते हैं कि कौए ने बर्तन के अंदर देखा होगा। तो झाँक कर देखना = अंदर देखना।

3) जिन शब्दों का अर्थ मिलने के बाद उनका अर्थ संदर्भ के अनुसार समझिए।

4) कहानी पढ़ने के बाद लेखक का उद्देश क्या है? सीख क्या मिली यह जानिए।

5) खुद के अनुभव के साथ कहानी का संबंध जोड़िए।

6) परिच्छेद संक्षेप में किसी को बताने की कोशिश करें।

गतिविधियाँ :

I) चित्र देखकर अनुमान लगाने की कोशिश कीजिए।

अ

ब

यह राहुल और उसकी बहन सोनू का कमरा है। राहुल को किताबें पढ़ना, गाड़ियों से खेलना अच्छा लगता है। सोनू के शौक कुछ अलग है। सोनू को चित्र बनाना, गुड़ियों से खेलना खूब अच्छा लगता है। सोनू की एक बुरी आदत थी। वह उसकी चीजें इधर-उधर बिखरा कर रखती थी। राहुल को यह पसंद नहीं था तो वे हमेशा लड़ते झगड़ते रहते। दोनों के कपड़े अलमारी में रहते हैं, यहाँ भी वही हाल है। रॉकी, उनका पालतू कुत्ता है। राहुल उसके साथ गेंद खेलता है।

गतिविधियाँ -

1) इन चित्रों में राहुल और सोनू का कमरा कौनसा है?

2) उनके कमरे में राहुल के सोने की जगह कौन सी है उसपर गोल कीजिए।

3) कौन सा वाक्य आपको सोनू की आदतों के बारे में बताता है?

चित्र देखकर, चित्र के बारे में अनुमान लगाइए।

II) नीचे कुछ लोगों की तस्वीरे दी हैं। उन तस्वीरों को देखिए।
क्या आप इनमें से किसी को जानते है?
इनके नाम और ये क्या काम करते है या करते थे वह लिखिए।

	ये लोग क्या काम करते हैं? या करते थे?	**नाम**
	____________________	________________
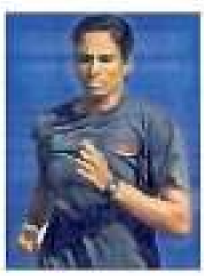	____________________	________________
	____________________	________________

II) निम्नलिखित विधान पढ़िए और अनुमान लगाइए कि यह विधान इनमें से किस व्यक्ति ने कहे होंगे। उनका नाम विधान के सामने लिखिए।

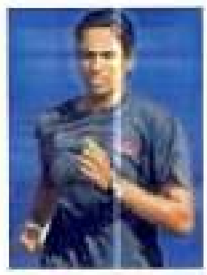

1) "मैं बचपन में अन्य लड़कियों के साथ दौड़ में हमेशा आगे रहती थी। परंतु मेरे माता-पिता को यह पसंद नहीं था। वे दौड़ने के बजाए शिक्षा पर अधिक जोर देते थे। बाद में मेरी लगन तथा कठिन परिश्रम से मुझे दौड़ में कामयाबी हासिल हुई"।

____

2) "मेरा सपना डाक्टर बनने का था और इसलिए सायन्स कालेज में दाखिला लिया था। घर में सब पढ़े-लिखे, ज्यादातर मेडिकल क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। कालेज में पढ़ते समय अचानक एक फिल्म करने का अवसर मिला और आगे भी ऐसे अवसर मिलते रहें। मैं एक प्रख्यात अभिनेत्री बनी। मैं अपने काम से बहुत संतुष्ट हूँ"।

____

3) "आजादी हम सबका ध्येय है। आओ इस ध्येय के लिए हम सब एक हो जाए। चलो, भारत और भारत के देशवासियों को आजाद करने का प्रण करते हैं। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा"।

____

1.2 परिच्छेद पर निर्धारित उत्तर लिखना।

जो परिच्छेद हम पहली बार पढ़ते हैं उन्हें "अपठित परिच्छेद" कहते हैं।

उस पर निर्धारित प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए

ध्यान रखें।

परिच्छेदों को समझने के लिए परिच्छेद को अच्छी तरह से दो या तीन बार पढ़ लेना जरुरी है।

* उत्तर लिखते समय यह जरूरी नहीं कि पहले प्रश्न का उत्तर पहले ही वाक्य में हो।

किसी भी प्रश्न का उत्तर कहीं भी हो सकता है।

* प्रश्न का उत्तर लिखते समय उत्तर के रूप में परिच्छेद मे लिखा हुआ वाक्य ज्यों का त्यों उतारना, उत्तर लिखना नही होता। प्रश्न के अनुसार शब्दों में बदलाव करना जरुरी होता है, और प्रश्नों के अनुसार लिखा हुआ उत्तर आदर्श उत्तर होता है।

* कहानी के पात्र द्वारा कहे हुए वाक्य कभी-भी उसी तरह उत्तर के रुप में नही लिखना चाहिए।

परिच्छेद को शीर्षक देना -

परिच्छेद को शीर्षक देते समय ध्यान रखें-

- शीर्षक **कम से कम शब्दों** में लिखिए।
- शीर्षक **परिच्छेद से संबंधित** हो।
- शीर्षक परिच्छेद में कही बात, **व्यक्ति, पात्र, घटना से संबंधित** होना चाहिए।

अब हम कुछ अपठित गद्यांश/परिच्छेद तथा कविता पढ़ेंगे। आप यह परिच्छेद ठीक तरह से पढ़ें तथा समझें। फिर उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करें।

I) अब हम गदयांश पढेंगे और उस पर निर्धारित प्रश्नों के उत्तर लिखने की कोशिश करेंगे।

बहुत पुरानी बात है। जून महीने की दोपहर थी। एक बड़ा सा भूरे रंग का कुत्ता लंगड़ाते हुए समुद्र किनारे चल रहा था। ऐसा लगता था, जैसे उसके आगे के पैरों के एक पंजे में कुछ चीज उसे चुभ रही थी। कुत्ता कभी अपना वह पैर बालू में रखता और फिर झट से ऊपर उठाता। ऐसे दर्द में वह अपने मालिक को ढूँढ रहा था। लेकिन मालिक तो तैरने गया था। फिर कुत्ता किनारे बैठ कर यहाँ-वहाँ देखने लगा कि कोई तो उसकी मदद करे। उसने देखा, दूर सफेद रंग की फ्रॉक पहने एक लड़की बैठी थी। वह लड़की दिखने में बहुत सुंदर थी इसलिए कुत्ते को लगा वह दयालू भी होगी। कुत्ता लंगड़ाते हुए उसके पास गया। लड़की उसे देखकर जोर से चिल्लायी, "अरे ! गंदे कुत्ते हट जा! मेरे कपड़े गंदे हो जाएगें। चल! भाग यहाँ से!" बेचारा कुत्ता! वहाँ से दूर हटा और फिर किनारे की भीड़ में कोई उसकी मदद करनेवाला ढूँढने लगा, जो उसके पंजे में चुभ रही नुकीली चीज को निकालकर उसे राहत दे सके।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) यह परिच्छेद किस के बारे में है?

2) कुत्ता लंगडाकर क्यों चल रहा था?

3) लेकिन मालिक तैरने गया था। इस वाक्य में वह कहाँ तैरने गया था इसका अनुमान लगाइए। और आपको ऐसा क्यों लगता है? कौन से वाक्यों से आप यह अनुमान लगाते हैं?

4) कुत्ते का मालिक कहाँ गया था?

5) कुत्ते को ऐसा क्यों लगा कि लड़की उसकी मदद करेगी?

6) इस परिस्थिति में कुत्ते को कैसा लगा होगा?

अ) खुशी ब) घबराहट क) अकेलापन ड) दु:ख

कहानी पर निर्धारित ऊपर दिए गए प्रश्नों के उत्तर कैसे ढूँढे?

* पहले हम यह परिच्छेद ध्यान से पढ़ेंगे और निम्नलिखित समझने की कोशिश करेंगे।

- गद्यांश किसके बारे में है?

- इस गद्यांश में आये हुए पात्र की क्या समस्या है?

- समस्या का हल निकाला या नहीं।

* दिए हुए प्रश्नों को पढ़िए।

* उत्तर देने के लिए प्रश्न किस बारे में पूछा है उस शब्द को गद्यांश में ढूँढिए।

* शब्द मिलने पर उस वाक्य को दोबारा पढ़िए और उसके आगे-पिछे आये हुए 2-3 वाक्यों को पढ़िए। वही पर आपको उत्तर मिल सकता है।

* उत्तर मिलने पर अपने शब्दों में उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए।

अब हम निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखने का प्रयास करेंगे।

1) यह परिच्छेद किस के बारे में है?

उत्तर : कुत्ते के बारे में है।

2) कुत्ता लंगड़ाकर क्यों चल रहा था?

उत्तर : क्यों कि उसके पंजे में नुकीली चीज चुभ गयी थी।
परिच्छेद में यह हमें वाक्य 4 से पता चलता है।

3) 'लेकिन मालिक तैरने गया था'। इस वाक्य में वह कहाँ 'तैरने गया था' इसका अनुमान लगाइए। और आपको ऐसा क्यों लगता है? कौनसे वाक्यों से आप यह अनुमान लगाते हैं?

उत्तर : तैरने गया था का मतलब - समुद्र में तैरने गया था। कुत्ता समुद्र किनारे चल रहा था। परिच्छेद में यह हमें वाक्य 3 से पता चलता है।

4) कुत्ते का मालिक कहाँ गया था?

उत्तर : कुत्ते का मालिक तैरने गया था।

5) कुत्ते को ऐसा क्यों लगा कि लड़की उसकी मदद करेगी?

उत्तर : कुत्ते को ऐसा लगा क्योंकि वह सुंदर थी।

6) इस परिस्थिती में कुत्ते को कैसा लगता होगा?

अ) खुशी ब) घबराहट क) अकेलापन ड) दु:ख

उत्तर :(ड) दु:ख

गतिविधियाँ :

I) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

बहुत साल पहले की बात है। एक बार विजयनगर के राजा ने एक रात में दो-चार बुरे सपने देखे। सुबह जागने पर राजा बहुत घबराया और सोचने लगा कि ऐसा न हो कि ये सपने सच हो जाएँ। राजा ने इन सपनों का फल जानने के लिए पंडित और ज्योतिषियों को बुलाया। सभी ने राजा के सपने सुने। एक पंडित ने कहा, "महाराज, आपके सपनों से ऐसा लगता है कि राज्य पर संकट आनेवाला है।" दूसरे ने कहा, "आपके प्राण, धन या राज्य पर बुरा समय आएगा।" यह सुनकर राजा और भी डर गया। राजा ने शांति के उपाय पूछे। किसी ने दान-धर्म का उपाय बताया तो किसी ने यज्ञ करने का। राजा ने मंत्री को बुलाकर आदेश दिया कि, नगर के सभी चौराहों पर यज्ञ कराओ और ज्योतिषों-ब्राम्हणों को मुँह-माँगा दान दो। पूरे नगर में यज्ञ और दान धर्म होने लगे। एक दिन उस राज्य से एक बड़े साधु गुजर रहे थे। उन्होंने सारे राज्य में हो रही पैसों की तंबाही देखी। वह राजा से मिलने दरबार में गए। तभी राजा ने अपने बुरे सपनों के बारे में साधु जी को बताया। वह सुनकर साधु ने कहा, "बुरे सपनों से डरकर ये उपाय करना गलत बात है। तुमने जो सपने देखे वे तुम्हारे मन के विचार हैं। इसमें घबराने की कोई बात नहीं। तुम अपने मन और काम में शुद्धता रखो।" यह सुनकर राजा को शांति मिली। राज्य में चल रहे यज्ञ-दानधर्म राजा ने तुरंत बंद करवा दिए। राजा के मन का सपनों के बारे में जो भ्रम था वह दूर हुआ और वह अपने काम में जुट गया।

प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1) पहला परिच्छेद पढ़कर राजा के बारे में क्या समझ में आता है?

जैसे : राज डरपोक था।
राजा अंधश्रद्धालू था। (उचित उत्तर)
राजा ज्यादा सोता रहता था।

2) पंडित और ब्राम्हणों को क्यों बुलाया गया?

3) "तबाही होना" इस शब्द से आपको क्या बोध होता है?

4) क्या आप पंडित और ज्योतिषियों द्वारा सुझाए गए उपायों से सहमत है?

5) साधु के उपाय से आप को क्या बोध मिलता है?

6) आप बुरा सपना देखने पर क्या करते हैं?

7) इस परिच्छेद का उचित शीर्षक क्या हो सकता है?

- राजा के बुरे सपने
- सपनों का हल
- शुद्ध मन

____

8) राजा के स्वप्नों का कौन सा उपाय सही था?

____

9) राजा के पैसे बरबाद हो रहे थे यह किन वाक्यों से समझता है?

____

II) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़िए और फिर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

एक बूढ़ा भिखारी एक बड़े खेत में आया। वह बहुत थक गया था और वह भूखा भी था। अंधेरा बहुत हो गया था और बरसात भी बहुत हो रही थी। उसने खुद से कहा, "मुझे कही तो सोने के लिए जगह ढूँढनी चाहिए। बहुत बारिश हो रही है। मैं इस घर में जाकर पूछता हूँ, शायद किसान मेरी मदद कर दें।" किसान उसे सोने के लिए जगह देगा यह सोचकर भिखारी किसान के घर पर गया और उसने दरवाजा खटखटाया।

1) इस कहानी में भिखारी की क्या समस्या है?

2) नीचे दिए वाक्यों से तर्क लगाइए कि आगे क्या होगा?

देखो दरवाजे पर कोई है......तुम्हें क्या चाहिए?......थोड़ी जगह दीजिए......

तुम्हारे लिए जंगल ही अच्छा है....... दरवाजा बंद कर दिया...।

अब कहानी का अगला हिस्सा पढ़िए और अपना तर्क/अनुमान सही है या गलत वह जाँच लीजिए।

किसान चाय पी रहा था, तभी उसकी बीवी ने कहा, "देखो दरवाजे पर कोई है।" किसान ने कहा, "ठीक है, मैं देखता हूँ।" उसने दरवाजा खोला। उसने देखा वहाँ सफेद बालोंवाला फटे पुराने कपड़े पहने एक बूढ़ा भिखारी खड़ा था। किसान ने पूछा, "तुम कौन हो? तुम्हें क्या चाहिए?" भिखारी ने कहा, "साहब, मैं एक भिखारी हूँ। बाहर बारिश हो रही है। मैं भूखा हूँ और बहुत थक गया हूँ। मुझे सिर्फ यह रात गुजारने के लिए थोड़ी जगह दे दीजिए।" किसान ने कहा, "तुम भिखारी हो ! मैं भिखारियों को आसरा नही देता। मेरे पालतू जानवरों के लिए मुझे तबेले की जरुरत है। तुम्हारे लिए जंगल ही अच्छा है।" "आपको तकलीफ दी, मुझे क्षमा करना।" यह कहकर, वहाँ से बूढ़ा भिखारी निराश होकर चल पड़ा। किसान ने दरवाजा बंद कर दिया।

क्या आपने लगाया हुआ तर्क कहानी से मिलता है?
हाँ/नहीं

प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1) कहानी के आधार पर निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत बताइए।

1) बहुत चलने से भिखारी थक गया था। ________

2) भिखारी ने किसान से कुछ खाने के लिए माँगा। ________

3) किसान ने सोचा कि उसके पालतू जानवर उस भिखारी से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। ________

4) किसान ने बूढ़े आदमी को जंगल में सोने के लिए कहा। ________

5) किसान को भिखारी अच्छा नहीं लगा। ________

2) निम्नलिखित वाक्य किस पात्र के लिए होंगे? इसका अनुमान लगाए।

1) मैं भूखा हूँ और थक भी गया हूँ। ____________________

2) देखो दरवाजे पर कोई है। ____________________

3) तुम्हारे लिए जंगल ही अच्छा है। ____________________

4) मुझे कहीं सोने के लिए जगह ढूँढनी चाहिए। ____________________

5) बुढ़े आदमी, तुम्हें क्या चाहिए? ____________________

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1) कहानी में किसान का स्वभाव कैसा है ?

____

2) किस वाक्य से यह पता चलता है कि किसान के पास बहुत सारे जानवर थे ?

____

3) किस वाक्य से यह पता चलता है कि किसान के घर में और कोई भी रहता है ?

____

4) कहानी में घटी घटना किस वक्त हुई?

____

5) इस कहानी का शीर्षक दीजिए।

____

III) निम्नलिखित परिच्छेद गांधीजी के अनुभव के बारे में है वह पढ़िए और फिर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मेरे हायस्कूल के प्रथम वर्ष में घटी यह घटना बहुत दिलचस्प है। श्री. गिल्स शिक्षा विभाग के निरीक्षक स्कूल को भेंट देने आए थे। उन्होंने हमें अंग्रेजी के कुछ शब्द, स्पेलिंग की गतिविधि के लिए दिए थे। अंग्रेजी शब्द जो हमें सुनकर बराबर लिखने थे। उसमें से एक शब्द था 'केटल' (kettle) वह मैंने गलत लिखा था। मेरे ध्यान में यह बात आए इसलिए शिक्षक जी ने अपने जूतों की आवाज से मुझे बताने का प्रयास किया, लेकिन वह व्यर्थ रहा। मैं समझ न पाया कि मैं दूसरे बच्चे की स्लेट से वह स्पेलिग की नकल कर लूँ ऐसा वह चाहते थे, और मैं सोचता रहा कि वे हमें नकल करने से रोकने के लिए वहाँ खड़े थे। इसका परिणाम यह हुआ कि मेरे अलावा सारे लड़कों ने

वह स्पेलिंग सही लिखा था। सिर्फ मैं ही मूर्ख था। बाद में शिक्षक जी ने मुझे मेरी मूर्खता समझायी, लेकिन इसका कोई परिणाम मुझ पर नहीं हुआ। मैं नकल करने की कला कभी-भी सीख न पाया।

<u>प्रश्नों के उत्तर दीजिए।</u>

1) श्री गिल्स कौन थे? ____________________

2) गांधीजी ने कौनसा शब्द गलत लिखा था? ____________________

3) गांधीजी क्या समझ नहीं पाए? ____________________

4) गांधीजी ने "केटल" शब्द कैसे लिखा था और क्लास के दूसरे लड़कों ने उसे कैसे लिखा था? ____________________

5) गांधीजी की गलती बताने के लिए शिक्षक ने कैसे संकेत किया? __________

6) इस परिच्छेद में शिक्षक ने जो किया क्या वह सही था? क्यों? __________
____

IV) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़िए और फिर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारत के एक महान संत जिन्हें हिंदू और मुस्लिम दोनों संप्रदाय का प्यार मिला। वे थे कबीर, उन्हें अकबर से प्रेरणा मिली थी, जो हिंदू-मुस्लिम एकता को बनाए रखना चाहते थे। वाराणसी में रहनेवाला एक नीरु नामक मुस्लिम जुलाहा था। एक दिन उन्हें तालाब किनारे एक छोटा बच्चा मिला। वह उस बच्चे को उठाकर घर लेकर गया और अपने बीवी से कहा," देखो अल्ला ने अपनी सुन ली और हमें यह बेटा दिया है।" उन्होंने उसका नाम रखा 'कबीर'।

कबीर एक अच्छे आज्ञाकारी बच्चे जैसे बड़े हो रहे थे लेकिन, वे दूसरे साधारण बच्चों जैसे नहीं थे। वे साधु-संतो की संगति ढूँढ़ा करते। बड़े होने पर जितने भी पैसे कबीर कमाते, वे उन्हें गरीबों को दे देते। कबीर चाहते थे कि एक गुरू उन्हें पढ़ाए। उन्होंने मशहूर स्वामी रामानंद के बारे में सुना था। वे स्वामी रामानंद के पास गए और उनसे खुदको उनका शिष्य बनाने की इच्छा प्रकट की, यह प्रस्ताव स्वामी रामानंद ने स्वीकार नहीं किया। लेकिन कबीर निराश न हुए।

1) इस परिच्छेद में किसके बारे में बताया गया है? ____________________

2) अकबर की किस बात से कबीर को प्रेरणा मिली ?

____

3) कबीर किसे मिले थे ?

____

4) कबीर किसका साथ ढूँढ़ते रहते?

____

5) कबीर किसे अपना गुरू बनाना चाहते थे?

____

6) 'इच्छा होना' और 'विद्यार्थी' इन शब्दों के लिए परिच्छेद में से पर्यायवाची शब्द ढूँढे और लिखिए।

____

7) भारत में हुए दो-तीन संतो के नाम लिखो। ________ ________ ________

8) नीरु कहाँ रहता था? ____________________

V) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़िए और फिर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

एक दिन रविनगर के राजा अपने मंत्री और सैनिक के साथ शिकार पर गए थे। बहुत देर राह देखने के बाद भी उन्हें शिकार नहीं मिला। तभी राजा को बहुत प्यास लगी। पानी की खोज में वे तीनों जंगल में घूमने लगे। थोड़ी दूरी पर उन्हें एक कुटिया दिखी। कुटिया के बाहर एक साधु बैठे थे। वह आँखे बंद कर के तपस्या कर रहे थे।

राजा ने सैनिक को साधु जी से पानी लेकर आने का आदेश दिया। सैनिक साधु के पास जाकर बोला, "ए भिखारी साधु, चलो हम सब को बहुत प्यास लगी है, पानी दो।" साधु जी शांत बैठे थे। सैनिक वहाँ बहुत देर तक खड़ा रहा। सैनिक ने खुद से कहा, "शायद यह साधु बहरा है।" सैनिक के खाली हाथ वापस आने पर राजा ने मंत्री को पानी लाने भेजा। मंत्री साधु जी के पास गए और उन्होंने कहा, "साधु जी, हमें प्यास लगी है, थोड़ा पानी दो।" साधु के कुछ भी न कहने पर मंत्री वापस लौट गए। आखिर में राजा स्वयं चलकर साधु के पास गया। पहले तो राजा ने साधु जी को झुककर प्रणाम करते हुए कहा, "साधु जी प्रणाम! साधु जी मुझे थोड़ी प्यास लगी है, कृपा करके थोड़ा पानी दीजिए।" साधु जी ने कहा, "राजन! बैठो। मैं तुम्हे पानी और थोड़े मीठे फल भी देता हूँ।" यह कहकर साधु जी ने अपनी आँखे खोली। राजा को आश्चर्य हुआ कि आँखो को बिना खोले साधु जी ने उसे कैसे पहचान लिया। साधु ने कहा , "अचरज मत हो! व्यक्ति की भाषा और व्यवहार, व्यक्ति की पहचान होती है। पहले तुमने अपने सैनिक को भेजा, उसकी भाषा में घमंड था।

फिर आए मंत्री जिनके भाषा में नरमी तो थी, लेकिन विनती का स्पर्श नहीं था। तुम्हारे आदर के साथ प्रणाम और विनम्र भाषा से ही मैंने तुम्हें पहचान लिया। जो व्यक्ति जिस स्तर का होता है, उसकी भाषा भी उसी स्तर की होती है। मीठे बोल बोलने से हमें कुछ भी प्राप्त हो सकता है।" .

प्रश्न:

1) यह कहानी किस जगह हुई होगी?____________________

2) कहानी में कितने और कौनसे पात्र है? ____________________

3) सैनिक, मंत्री और राजा के पानी माँगने के तरीके में क्या समानता या विभिन्नता थी? ____________________

4) आप को इस कहानी से क्या बोध मिलता है? ____________________

5) परिच्छेद को उचित शीर्षक दो। ____________________

VI) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़िए और फिर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

एक बूढ़ा आदमी था, जिसे समुद्र से बहुत डर लगता था। एक बार उसने एक मल्लाह से पूछा, "तुम्हारे पिताजी कहाँ मरे?" गंगाराम ने उत्तर दिया, "समुद्र के तुफान से समुद्र में ही मर गए।

"और तुम्हारे दादा जी ?"

"वे समुद्र में डूबकर मर गए।"

"और तुम्हारे परदादाजी? वे कैसे मरे?"

"वे भी समुद्र में ही मर गए।"

"और फिर भी तुम समुद्र में जाने की हिम्मत रखते हो, जब कि तुम्हारे दादा-परदादा यहीं मरे हैं? मुझे लगता है तुम मूर्ख हो?" इस पर गंगाराम ने कहा, "अब मुझे बताओ, आपके पिताजी कहाँ मरे?"

"बहुत ही आराम से पलंग पर!"

"और आपके दादाजी?" "पलंग पर" "और पर-दादाजी?"

"जैसे मेरे दादाजी उसी तरह बहुत ही शांति से पलंग पर।"

"अच्छा" गंगाराम ने कहा, "फिर भी तुम पलंग पर सोने की हिम्मत कर सकते हो, जब कि तुम्हारे दादा-परदादा पलंग पर मर चुके हैं।"यह सुनकर बूढ़ा आदमी चुप हो गया।

प्रश्न:

1) गंगाराम के पिताजी कहाँ मरे थे?____________________

2) गंगाराम क्या काम करता था?____________________

3) बूढ़े आदमी को किससे भय लगता था?____________________

4) बूढ़े आदमी को ऐसा क्यों लगा कि गंगाराम मूर्ख है?____________________

5) बूढ़े आदमी के दादा-परदादा कहाँ गुजरे थे?____________________

6) आपको इस कहानी से क्या सीख मिली?____________________

1.3 कविता पढ़ना और समझना।

1)अ) निम्नलिखित कविता पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

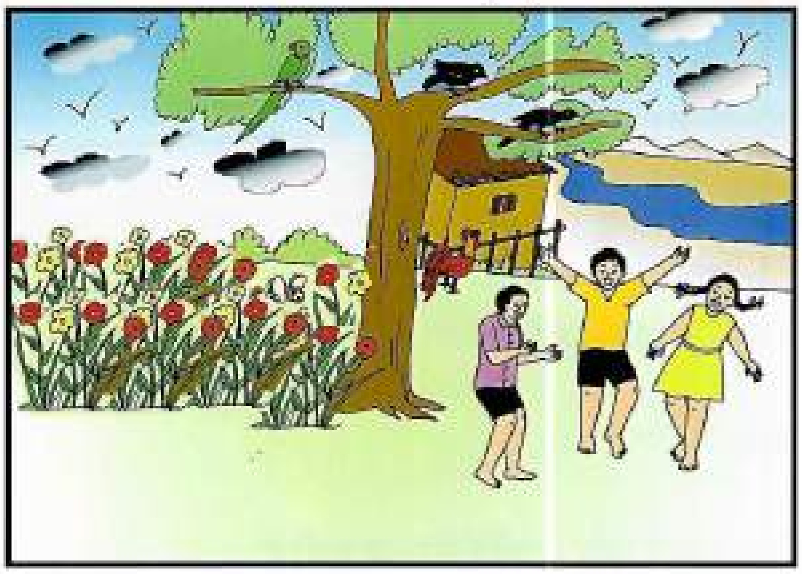

बादल, तुम बरसाओ पानी,
आज नहाएँगे मनमानी।
रिम-झिम बरसो,
छम-छम बरसो,
धीरे-धीरे,
थम-थम बरसो।
मर जाए गरमी की नानी,
बादल, तुम बरसाओ पानी।
हम सब गाएँ,
धूम मचाएँ,
जो मिल जाए,
गले लगाएँ।
नई लगे हर चीज पुरानी
बादल तुम बरसाओ पानी।

1) यह कविता किस बारे में है?
   अ) पानी
   ब) बादल
   क) गरमी

2) यह कविता कौन गा रहा है?
   अ) लड़का
   ब) बच्चे
   क) लड़की

3) कविता की किन पंक्तियों से बच्चों की इच्छा प्रकट होती है?
   अ) बादल पानी बरसाओ, गरमी जाने दो और हमें नहाने दो।
   ब) नई लगे हर चीज पुरानी।
   क) गरमी को मार दो।

4) तुम्हें काले बादल देखकर कैसे लगता है?
   अ) डर लगता है।
   ब) मजा आता है।
   क) बारिश बरसे और मैं भीग जाऊँ ऐसा लगता है।

I)ब) निम्नलिखित कविता पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

तितलियाँ ये तितलियाँ
प्यारी प्यारी तितलियाँ।

रंगबिरंगी तितलियाँ
सबका मन लुभाने वाली,
प्यारी प्यारी तितलियाँ।

देखकर इनके रंगों को
मन में आती है खुशी की फुहार।

चेहरे पर है आती मुस्कान
ऐसी है ये प्यारी प्यारी तितलियाँ।

एक पौधे से दूसरे पर मंडराती
एक फूल से दूसरे फूल पर जाती।

इनमें से पराग रस चुसती
नाचती गाती उड़ती फिरती।

मस्ती में अपनी मस्त रहती
ऐसी है ये प्यारी प्यारी तितलियाँ।

सबका मन लुभाने वाली
हमारी प्यारी तितलियाँ।

- राजश्री कासलीवाल

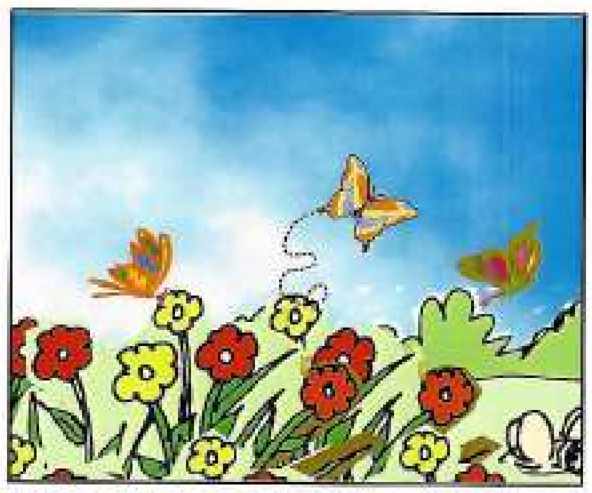

1) यह कविता किस के बारे में है?

____

2) तितलियों के रंग देखकर मन में क्या होता है?

____

3) तितलियाँ क्या कहती हैं?

____

पाठ-2

लेखन कौशल

लेखन एक कला है। इसे हम कभी भी विकसित कर सकते हैं। इस कला को बढ़ावा देने के लिए हमें निम्नलिखित पहलुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए। लेखन में विशेषता प्राप्त करने के लिए हमें नियमित वाचन करने की आदत डालनी चाहिए। पढ़े हुए विषयों पर (कहानियाँ, निबंध, समाचार, लेख इत्यादी) सोचना चाहिए। उन पर मनन करना चाहिए। इन सब को नियमित रुप से करने से लेखन कला विकसित होने में मदद मिलती है। लेखन कला की कईं विशेषताएँ होती हैं।

जैसे -

1) **शुध्द लेखन** - लेखन शुध्द और व्याकरण के नियम अनुसार होना चाहिए। विराम चिन्हों का उचित प्रयोग हो ताकि रचना अच्छी तरह समझी जा सके।

2) **सरलता** - लेखन करते समय भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

3) **क्रमबध्दता**- जो भी हम लिखते हैं वह क्रमबध्द हो।

4) **लेखन रोचक** और **कल्पनात्मक** होनी चाहिए ताकि लेखन आकर्षक लगे।

इसके अलावा हमें ध्यान में रखना चाहिए कि हम जो भी लिखें वह किसी की नकल न हो अर्थात अपने ही शब्दों में होना चाहिए।

जब हम कहानी अथवा लेख लिखते हैं तब इन बातों का ध्यान रखें।

- दी गयी रुप रेखा के अनुसार कहानी लिखें।
- क्रमबध्द और शुध्द लिखें।
- जहाँ आवश्यकता हो वहाँ मुहावरे, कहावतें इत्यादि का प्रयोग करें।
- समारोप करें।
- उचित 'शीर्षक' दें।

लेखन करते समय लिखने का उद्देश्य क्या है इस पर विचार करे, क्योंकि उसका परिणाम लिखित भाषा पर होगा। जैसे उद्देश्य मनोरंजन है तो उसमें आनेवाली भाषा में चुटकुले, मुहावरें अथवा कहावतें होंगी। अगर उद्देश्य जानकारी देना है तो, भाषा अलग होगी। इन सबके लिए आपका शब्दकोश बड़ा होना जरुरी है।

1) आपका **शब्दकोश** (शब्दसंपत्ति) अधिक तो हो ही, लेकिन उसके साथ-साथ वह उच्चतम स्तर का भी होना चाहिए। उन शब्दों का सही प्रयोग करने का कौशल तो, आपकी किताबें पढ़ने की आदत से ही बढ़ सकता है।

उदाहरण : 'खाना' की जगह 'भोजन' 'मिट्टी' की जगह 'मृदा'

'घोड़े पर सँवार होनेवाला' के बजाय 'घुड़सवार'।

जैसे- हाय! हाय! इस हलवाई का दिल तो पत्थर है।

इस वाक्य में हलवाई के दिल की तुलना पत्थर से की गई है मतलब, उसका दिल पत्थर नहीं बल्कि पत्थर की तरह कठोर है। तो इस तरह से तुलना करके हमारी भाषा अलंकारिक हो जाती है।

जैसे- सुमन के नयन हिरन की तरह है। ऐसे ज्यादा से ज्यादा, अच्छे और आकर्षक शब्दों का लेखन में प्रयोग होना चाहिए।

- शब्दकोश बड़ा होने से आप अपने विचार, अनुभव, कल्पना या सुझावों को सही शब्दों में रुपांतरित करके वाचक के सामने प्रस्तुत कर सकते हो।

- लेखन में मुहावरे, कहावते तथा वाक्य प्रचार का प्रयोग करना बहुत ही जरुरी और महत्त्वपूर्ण है, ताकि लिखी हुई कहानी पूरी तरह संपन्न हो और पढ़ते वक्त वाचक को मजा आए, आकर्षक लगे और मनोरंजक लगे।

2) जब हम किसी चीज, वस्तु, व्यक्ति का **वर्णन** करते हैं तब वर्णन करतें समय हम उस चीज, वस्तु, व्यक्ति का रुप, आवाज, क्रिया, आपकी उसकी तरफ की भावनाएं उनसे जुड़ी हुई विशेषणों का सही उपयोग करके कहानी को रोचक या मनोरंजक बना सकते हैं। लेकिन इसके लिए मुहावरे और कहावतों का अर्थ मालूम होना जरुरी है, साथ ही उनका प्रयोग कहाँ और कब करना है यह समझना चाहिए।

जैसे, अगर हमें जादूगर के बारे में लिखना है तो सिर्फ - एक जादूगर था। उसने जादू का खेल दिखाया और सब उसे देखकर आश्चर्यचकित हो गए थे। यह लिखने से लेखन रोचक नहीं लगता। इसे रोचक कैसे बनाते है यह सीखेंगे।

जब हम किसी व्यक्ति का वर्णन करते हैं तब निम्नलिखित आकृती के अनुसार अलग-अलग पहलुओं का वर्णन करें तो अधिक मनोरंजन हो सकता है।जैसे- व्यक्ति का रहन-सहन, पेहराव, आदतें, कहाँ से आया, आपके उससे जुड़े अनुभव इत्यादी।

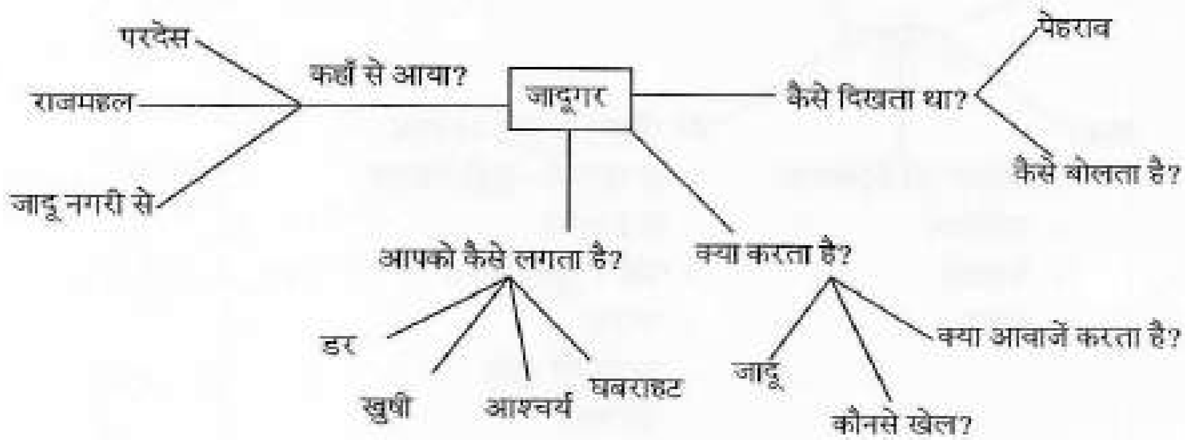

- खुल जा सिमसिम
- फूलों की बरसात
- खरगोश निकालना
- रूमाल से अनेक रूमाल निकालना
- पत्तों का खेल

एक दिन जादूनगरी से एक जादूगर हमारे गाँव आया। उसके सिर पर लंबी सी टोपी, हाथ में जादू की छड़ी, लंबा सा कोट पहने वह स्टेज पर आया। उसने हाथ जोड़कर सबको नमस्ते किया और मुँह से कुछ बोलते-बोलते जादू की छड़ी घुमायी - और चारों ओर फूल गिरने लगे। सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये।

अगर हम दिए गए दोनों परिच्छेदों को देखें तो परिच्छेद (2) रोचक लगता है।

मौसम - मौसम के बारे में लिखते समय निम्नलिखित पहलुओं पर हम लिख सकते हैं। इन पहलुओं का प्रयोग करके परिच्छेद लिखने का प्रयास करें।

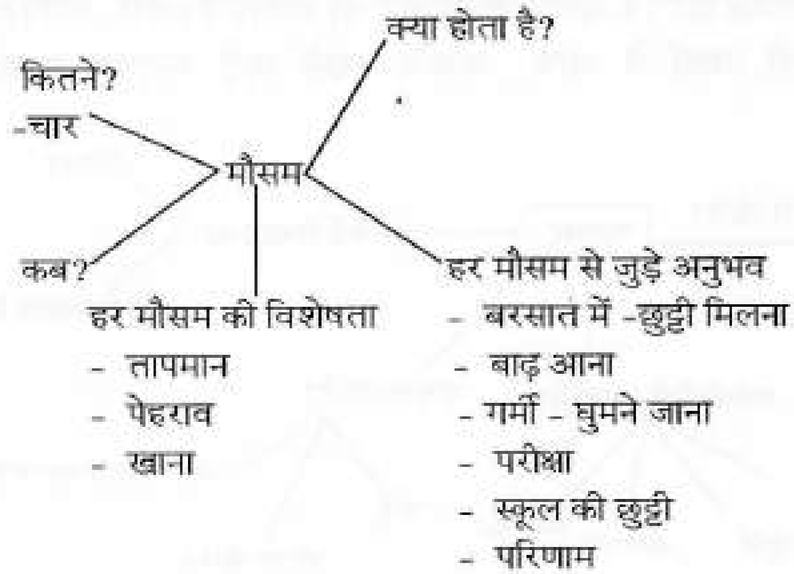

इसी तरह निम्नलिखित के लिए परी, राक्षस, रेलगाड़ी पर अपनी कापी में परिच्छेद लिखिए।

3) मुहावरा एक पदबंध होता है जिसका एक विशेष अर्थ होता है और कहानी या निबंध में इसका प्रयोग करने से भाषा अलंकृत हो जाती है। यहाँ कुछ मुहावरें, उनके अर्थ और उदाहरण वाक्य के साथ दिए हैं। उन्हें पढ़िए और समझिए। इसका अध्ययन (अभ्यास) करने के बाद इसे अपने रोज के व्यावहारिक भाषा में प्रयोग कीजिए, ताकि ये मुहावरें और कहावतें अच्छी तरह से आपको याद हो जाए। जब आपको इनके अर्थ याद हो जाएंगे, तो आप सरलता और आसानी से इनका प्रयोग लिखते वक्त कर सकते हैं।

कुछ मुहावरे,उनके अर्थ और मुहावरों का प्रयोग किए हुए वाक्य पढ़िए और समझिएः-

1) मुहावरा- आग पानी का बैर। **अर्थ-** जबरदस्त शत्रुता।

साधारण वाक्य - साप और नेवले में जबरदस्त शत्रुता होती है।

(यह वाक्य इतना प्रभावशाली नही लगता।)

मुहावरे का प्रयोग - साप और नेवले में आग पानी का बैर होता है। यह वाक्य अधिक रोचक लगता है।

2) **मुहावरा-** आकाश पाताल एक करना। **अर्थ-** कोई कसर न छोड़ना अथवा सब प्रयत्न करना।

साधारण वाक्य-अपनी खोई हुई सबसे प्यारी गुड़िया ढूँढ़ने के लिए ममता ने कोई कसर न छोड़ी।

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य- अपनी खोई हुई सबसे प्यारी गुड़िया ढूँढ़ने के लिए ममता ने आकाश पाताल एक कर दिया।

3) **मुहावरा-** चादर से बाहर पैर पसारना। **अर्थ-**आमदनी से ज्यादा खर्चा करना।

साधारण वाक्य-आमदनी से ज्यादा खर्चा करने से अपना ही नुकसान होता है।

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य- चादर से बाहर पैर पसारने से अपना ही नुकसान होता है।

4) **मुहावरा-** आँखे चुराना। **अर्थ-**खुद को छिपाना।

साधारण वाक्य- झूठ पकड़े जाने पर राज टीचर से खुद को छिपाता रहा।

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य- झूठ पकड़े जाने पर राज टीचर से आँखे चुराता रहा।

5) **मुहावरा-** पाँचो ऊँगलियाँ घी में। **अर्थ-** बहुत लाभ होना।

साधारण वाक्य-गरीब ड्राइवर की लाटरी खुलने पर उसे बहुत लाभ हुआ।

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-गरीब ड्राइवर की लाटरी खुलने पर उसकी पाँचो ऊँगलियाँ घी में थी।

6) **मुहावरा-** शेर के दाँत गिनना। **अर्थ-**साहस पूर्ण काम करना।

साधारण वाक्य- बाढ़ में डूबते हुई बच्ची को बचाकर छोटे राजू ने साहसपूर्ण काम किया।

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य- बाढ़ में डूबती हुई बच्ची को बचाकर छोटे राजू ने शेर के दाँत गिनने का काम किया।

7) **मुहावरा-** सात तालों में बंद रखना। **अर्थ-**बहुत हिफाजत से रखना।

साधारण वाक्य- दीवाली के पटाखे रवि ने बहुत हिफाजत से रख दिए।

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-दीवाली के पटाखे रवि ने सात तालों में बंद करके रखे।

गतिविधियाँ :

I) **अब आप दिए हुए साधारण वाक्यों में दिए मुहावरों का प्रयोग कीजिए।**

मुहावरा- अंगारे उगलना। **अर्थ-** क्रोध में कठोर शब्द बोलना।

जैसे,

साधारण वाक्य- झगड़े में रोहन ने सोहन को क्रोध में कठोर शब्द बोंले।

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य- झगड़े में रोहन ने सोहन पर अंगारे उगाले।

1) **मुहावरा-** उलटी गंगा बहाना। **अर्थ-** प्रतिकूल या विरोधी बातें करना।

साधारण वाक्य- बिल्ली का चूहों से दोस्ती करना प्रतिकूल बात करने जैसा है।

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-

____

2) **मुहावरा-**काम तमाम करना। **अर्थ-**मार डालना।

साधारण वाक्य-भूख लगने पर शेर ने अपने दोस्त खरगोश को ही मार डाला।

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-______________________________

3) **मुहावरा-** छक्के छुडाना। **अर्थ-**हराना।

साधारण वाक्य-खेल प्रतियोगिता में आठवी कक्षा की टीम ने नौवी कक्षा की टीम को हराया

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-______________________________

4) **मुहावरा-** पहाड़ टूट पड़ना। **अर्थ-** बहुत बड़ा संकट आना।

साधारण वाक्य-छोटी उम्र में पिताजी गुजरने से दीपू पर बहुत बड़ा संकट आ पड़ा।

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-______________________________

5) **मुहावरा- नाक में दम करना** **अर्थ-** बहुत तंग करना।

साधारण वाक्य- नटखट राहुल ने माँ को बाजार में बहुत तंग किया।

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-______________________________

II) निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग करके उचित वाक्य लिखिए।

जैसे -

मुहावरा - साँस लेना **अर्थ** - फुरसत पाना।

वाक्य - शादी की तैयारियाँ होने पर चाचीजी ने चैन की साँस ली।

1) **मुहावरा** - बात बढ़ाना **अर्थ** - झगड़ा बढ़ाना।

वाक्य ____________________

2) **मुहावरा** - पीठ थपथपाना **अर्थ** - शाबासी देना।

वाक्य ____________________

3) **मुहावरा** - आँखे डबडबाना **अर्थ** - आँखों में आँसू आना।

वाक्य ____________________

4) **मुहावरा** - ईद का चाँद होना **अर्थ** - बहुत दिनों के बाद दिखाई देना।

वाक्य ____________________

5) **मुहावरा** - पेट में चूहे कूदना **अर्थ** - खूब भूख लगना।

वाक्य ____________________

6) **मुहावरा** - कमर कसना **अर्थ** - तैयार होना।

वाक्य ____________________

7) **मुहावरा** - छक्के छुड़ाना **अर्थ** - हराना।

वाक्य ____________________

8) **मुहावरा** - सिर पर भूत सवार होना **अर्थ** - धुन सवार होना।

वाक्य ____________________

9) **मुहावरा** - घर सिर पर उठा लेना **अर्थ** - अत्यंत कोलाहल करना।

वाक्य ____________________

III) इन मुहावरों का अर्थ ढूँढिए और फिर उनको वाक्यों में प्रयोग करके लिखिए।

1) **मुहावरा-** पत्थर की लकीर **अर्थ-**

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-____________________

2) **मुहावरा-** हाथ पाँव फूलाना। **अर्थ-**

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-____________________

3) **मुहावरा-** दो नाँव पर सँवार होना। **अर्थ-**

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-____________________

4) **मुहावरा-** बहती गंगा में हाथ धोना। **अर्थ-** ____________

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-____________________

5) **मुहावरा-** आँखों में खून उतर आना। **अर्थ-** ____________

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-____________________

6) **मुहावरा-** आग लगने पर कुआँ खोदना। **अर्थ-** ____________

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-____________________________

7) **मुहावरा-** रंग उतरना। **अर्थ-** ____________

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-____________________________

8) **मुहावरा-** हवा से बातें करना । **अर्थ-** ____________

मुहावरा लिखा हुआ वाक्य-____________________________

IV) निम्नलिखित वाक्य पढ़िए और अर्थ को जानकर उसमें उचित मुहावरे का प्रयोग कीजिए।

1) नीता को अमेरिका वाली मौसी ने सुंदर गुड़िया दी थी। नीता ने उसे बहुत सँभालकर रखा।

____

2) अपने बेटे को ढूँढने के लिए बेचारी धोबिन ने कोई कसर न छोड़ी।

____

3) खजाना मिलने पर अलीबाबा को बहुत लाभ हुआ।

____

4) एक दिवसीय क्रिकेट मैच में बांगलादेश की टीम ने भारत के टीम को हराया।

____

5) सरकार अकाल पीड़ित गाँव में गरीब किसानों को अनाज बाँट रही थी। तभी चालाख करोड़ीमल सेठ ने भी अपना फायदा कर लिया।

____

4) **लोकोक्तियाँ / कहावतें -** किसी बात को प्रमाणित करने के लिए कहावत का प्रयोग करते हैं। कहावत भी भाषा को आकर्षक और रूचिपूर्ण बनाती है और वाचक को यह मनोरंजन कराती है। कहावत अपने आप में एक पूरा अर्थ पूर्ण वाक्य होता है और इसलिए यह साधारण वाक्य से ज्यादातर अलग रहते हैं। जब की हमने देखा कि मुहावरें जिस वाक्य में आते हैं उस वाक्य का हिस्सा बन जाते हैं। कहावत स्वतंत्र रूप से लिखने पर उसका अर्थ समझ में आता है।

निम्नलिखित कहावतें पढ़िए उनके अर्थ और प्रयोग समझिए।

1) **कहावत-** घर की मुर्गी दाल बराबर **अर्थ-** घर की चीज का मूल्य न समझना।

वाक्य- मीनू की माँ बहुत अच्छे लड्डू बनाती है। लेकिन मीनू खरीदे हुए लड्डू खाती है। इसे कहते है घर की मुर्गी दाल बराबर।

2) **कहावत-**चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए **अर्थ-** बहुत कंजूस होना।

वाक्य- बहुत बीमार होने पर भी सेठ जी डाक्टर के पास नही जा रहे थे। सच ही कहा है चमड़ी जाए पर दमड़ी ना जाए।

3) **कहावत-**धोबी का कुत्ता ना घर का ना घाट का **अर्थ-** अस्थिर व्यक्ति कहीं का नहीं रहता।

वाक्य- चाचा जी के मना करने पर भी नीता दीवाली पर मामा के घर गई। वहाँ जाकर देखा मामा काम के लिए दूसरे गाँव गए थे। नीता की हालत धोबी के कुत्ते जैसे हुई जो घर का रहा ना घाट का।

4) कहावत- एक मछली सारे तालाब को गंदा करती हैं।

अर्थ- बुरी संगत का परिणाम बुरा होता है।

वाक्य- राजू ने अपनी बुरी आदतों से सब मित्रों को भी बिगाड़ रखा था। कहते हैं ना की एक मछली सारे तालाब को गंदा करती हैं।

5) कहावत- मान न मान, मैं तेरा महमान। **अर्थ-** जबरदस्ती गले पड़ना।

वाक्य- मोहन के दोस्त का दोस्त सोहन मोहन के घर रहने चला आया।

यह तो वही बात हुई मान न मान, मैं तेरा मेहमान।

I) निम्नलिखित कहावतों के अर्थ समझिए और उसे वाक्य में प्रयोग कीजिए।

1) कहावत-साप भी मर जाएँ और लाठी भी न टूटे।

अर्थ- किसी भी नुकसान के बिना काम हो जाए।

वाक्य- ______________________________

2) कहावत-नाच न जाने आँगन टेढ़ा। **अर्थ-** काम न आने पर दूसरों को दोष देना

वाक्य- ______________________________

3) कहावत- बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद **अर्थ-**मनुष्य को मिली हुई चीज की कदर न होना।

वाक्य-______________________________

4) कहावत- हाथ कंगन को आरसी क्या! **अर्थ-** प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता!

वाक्य- ______________________________

5) कहावत- पाँचों ऊँगलियाँ एक सी नही होती। **अर्थ-** सभी लोग एक जैसे नहीं होते।

वाक्य- ______________________________

6) **कहावत-** उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

अर्थ-दोषी व्यक्ति ने निर्दोष व्यक्ति को दोषी ठहराया।

वाक्य- ______________________

7) **कहावत-** खोदा पहाड़ निकला चूहा। **अर्थ-** अधिक परिश्रम थोड़ा लाभ।

वाक्य- ______________________

8) **छोटा मुँह और बड़ी बात** - अपनी योग्यता से बढ़कर बात करना।

वाक्य- ______________________

9) **दूर के ढ़ोल सुहावने** - कई वस्तुएँ असल में अच्छी नहीं होती केवल दूर से अच्छी लगती है।

वाक्य- ______________________

10) **रस्सी जल गयी पर बल न गया** - नुकसान बहुत हो गया मगर गर्व नहीं गया।

वाक्य- ______________________

III) उचित कहावतों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

1) आलू के पराठे मीना ने बनाए थे। लेकिन वे आढ़े-तेढ़े बने थे। मीना नए खरीदे हुए चकला-बेलन को दोष दे रही थी। इसे कहते हैं ________________

2) अपनी चोरी पकड़े जाने पर रमेश अपने मित्र सुरेश पर चोरी का गुनाह डाल रहा था। दोषी व्यक्ति निर्दोष व्यक्ति को दोषी बता रहा था। इसे कहते हैं...

____

3) रामलाल हमेशा अपने छोटे बेटे को बेवकूफ कहता रहता क्योंकि उसके दो बड़े बेटे बहुत ही होशियार थे। एक दिन लीला मौसी ने रामलाल को समझाया कि सभी लोग एक जैसे नहीं होते। इसे कहते है...

____

4) रामलाल ने अपने खेत में कुआ खुदवाने के लिए पानी की तरह पैसा लगाया। लेकिन उसका कुछ भी फायदा न हुआ। सिर्फ एक छोटा पानी का कुंड निकला। अधिक मेहनत कम लाभ। इसे कहते हैं ...

____

5) रामसिंह चपरासी बनने के बाद किसी से सीधे मुँह बात नहीं करता। इसे कहते है

____

पाठ-3

कहानी लेखन

कहानी लिखते समय कुछ बातें ध्यान में रखना जरुरी है जैसे:

- कहानी में एक शुरूआत होती है - जैसे बहुत पुरानी बात है, या बहुत साल पहले की बात है।

  ऐसा लिखने से कहानी पढ़ने में मजा आता है।

- शुरूवात में कहानी की जगह का वर्णन, जगह का नाम, फिर कहानी के मुख्य पात्र का नाम, वर्णन, स्वभाव का वर्णन लिखना होता है।

- कहानी के बीच में क्या संकट, कठिनाई आती है?

- अंत में क्या होता है? कहानी से आपको अथवा कहानी के मुख्य पात्र को क्या सीख मिलती है?

- कहानी का शीर्षक कहानी से संबंधित हो, कम से कम और सरल भाषा में लिखा हो।

- कहानी हमेशा भूतकाल रूप में लिखनी होती है।

- कहानी की ररूपरेखा को हम निम्मलिखित मुद्दों में विभाजित कर सकते हैं:

  * **शुरूवात** : पात्र कौन हैं? पात्र का नाम क्या है? कहानी की जगह कौनसी है? (जंगल /गाँव /शहर नदी किनारे) पात्र की स्थिति कैसी ? (पात्र का वर्णन जैसे एक किसान था। किसान बहुत बूढ़ा हो गया उसे बहुत थकान

होती थी।) इसमें पात्र के बारे विशेषण लगाकर हम पाठक के मन में पात्र की एक छवि तैयार कर सकते है।

* **संकट/मुख्य विषय** पात्र पर क्या संकट आता है? उस संकट का वह कैसे सामना करता है?

* **अंत** : कहानी का अंत क्या है यानि कहानी के अंत में पात्र के साथ क्या होता है? अंत खुशहाल है या दुखद है?

* **सीख** : कहानी से आम आदमी को क्या सीख मिलती है? या हमें क्या सबक लेना चाहिए।

* **शीर्षक** : कहानी का शीर्षक संक्षिप्त होना चाहिए, साथ ही वह कहानी, कहानी के पात्र से संबंधित होना चाहिए। पात्र के वर्णन को दर्शाता या उसके स्वभाव से जुड़ा हुआ विशेषण देकर हम कहानी का शीर्षक दे सकते हैं। कहानी लिखने के बाद आपको पूरी तरह कल्पना आएगी कि कहानी किस बारे में है, और कहानी का शीर्षक देने में आसानी होगी।

जैसे :-   - "आलसी रामू"
- "लालची नाई"
- "होशियार कौआ"

इसके अलावा हम कोई कहानी से जुड़े कहावत का प्रयोग कहानी को शीर्षक देने के लिए कर सकते हैं।

जैसे :-   - जैसे को तैसा
- नाच न जाने..........
- जैसा गाँव वैसा वेष

आओ रूपरेखा के अनुसार कहानी लिखने का प्रयास करते हैं।

एक गरीब आदमी .... पाली हुई मुर्गी का रोज एक सोने का अंडा देना .... गरीब आदमी को लालच होना .... मुर्गी को काटना .... पछताना।

धनलक्ष्मी

हम इन मुद्दों को विभाजित करेंगे।

*	**शुरूवात**	: एक गरीब आदमी - नाम, वर्णन, काम, पाली हुई एक मुर्गी का रोज एक सोने का अंडा देना।
*	**संकट/मुख्य विषय**	: गरीब आदमी को लालच होना।
*	**अंत**	: मुर्गी को काटना, गरीब आदमी को पछतावा होना।
*	**सीख**	: लालच का फल बुरा होना।
*	**शीर्षक**	: विशेषण + संज्ञा लालची आदमी

इन मुद्दों की मदद से दो अलग तरीके से कहानी लिखी गई है। उनको पढ़िए।

पर्याय 1) शीर्षक- ________________

एक गरीब आदमी था - शंकर। कभी-कभी खेतो में मजदूरी कर के वह कुछ पैसे कमाता था। उसके पास एक मुर्गी थी, जिसके अंडे बेचकर उसे कुछ और पैसे मिलते थे। वह अपनी गरीब हालातं से परेशान था। एक दिन अचानक उसकी मुर्गी ने एक सोने का अंडा दिया, यह देखकर शंकर हैरान हुआ। भगवान का आशीर्वाद समझकर वह बहुत खुश हुआ। अब वह रोज सोने का एक अंडा लेकर बाजार जाकर बेचता।उन पैसों से वह घर खर्च चलाकर कुछ पैसे भी बचाता था। परिवार के सदस्य भी खुश थे। एक दिन शंकर के मन में विचार आया कि 'यह रोज एक सोने का अंडा मिलने से कुछ ज्यादा पैसे नहीं मिलते। अगर मैं इस मुर्गी को काट दूँ, तो मुझे बहुत सारे सोने के अंडे मिल जाएंगे।'

और उसने मुर्गी को काट दिया। लेकिन फिर अंडे ना मिलने पर रोने लगा, पछताने लगा।

पर्याय2) शीर्षक- ________________

बहुत पुरानी बात है। एक छोटासा गाँव था। गाव का नाम था रामपूर। वहाँ एक गरीब आदमी रहता था। उसका नाम था शंकर वह खेतों में मजदूरी करता था और उसी से आए पैसों से घर चलाता था। कहने को तो उसने एक मुर्गी पाल रखी थी। मगर उससे उनको ज्यादा लाभ नहीं होता था। अपनी गरीबी से वह बहुत परेशान था। एक दिन पता नही! शायद भगवान की मर्जी से मुर्गी ने एक सोने का अंडा दिया। सोने का अंडा देखकर शंकर आश्चर्यचकित हो गया। पहले तो उसे अपनी आँखो पर विश्वास न हुआ, लेकिन फिर अंडे को अच्छी तरह से देखने के बाद वह खुशी से झूम उठा। उसे लगा कि अब उसके दिन खुशी भरे होंगे। सोने का अंडा बेचना, पैसे लाना, अच्छा खाना- पीना यह तो शंकर का रोज का काम बन गया था। एक दिन बैठे बैठे शंकर के खाली दिमाग में बात आई, 'रोज एक सोने के अंडे से कुछ ज्यादा पैसे नहीं मिलते। मैं इस मुर्गी को काट दूँ तो सारे के सारे अंडे मुझे एकसाथ मिलने पर मैं तो बहुत अमीर बन जाऊँगा।' यह सोचकर शंकर के मन में लड्डू फूटने लगे और उसने मुर्गी को काट डाला। मगर देखा तो क्या!!! अंदर उसे एक भी सोने का अंडा नहीं मिला और वह जोर जोर से रोने लगा। हाय रे किस्मत! ना तो ढ़ेर सारे सोने के अंडे मिले और ना ही मेरी मुर्गी रही और वह अपने किए पर पछताने लगा।

सीख- लालच का फल बुरा होता है, इसलिए लालच कभी नहीं करना चाहिए।

पढ़ने के बाद आपको कहानी का कौनसा पर्याय अच्छा लगा ?

दूसरी कहानी पहली कहानी से अच्छी है क्योंकि दूसरे कहानी की शुरूआत बहुत पुरानी बात है। एक छोटेसे गाँव में एक .... ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। दूसरी कहानी ज्यादा मनोरंजक, रोचक लगती है क्योंकि इसमें योग्य कहावतें, (रेखांकित) मुहावरों का प्रयोग किया है। अब इसमें कहानी का पात्र शंकर का लालची स्वभाव समझता है, इसलिए कहानी के शीर्षक देते समय हम इस बात को ध्यान में रखेंगे। 'लालची शंकर, लालची आदमी, लालच का फल' इन शीर्षकों का विचार कर सकते हैं।

गतिविधियाँ।

I) रूपरेखा के अनुसार दी हुई कहानी पढ़िए और पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

रूपरेखा - एक जंगल .... घमण्डी खरगोश को अपने तेज गति पर अभिमान ...... कछुए को 'धीमेभाई चिढ़ाना ...... दौड़ की प्रतियोगिता .... बंदर निर्णायक .... दौड़ते वक्त खरगोश के पीठ पर गिरे पत्ते से खरगोश डर जाना .... सोचना आसमान फट गया ....अपने बील में घुसना ...... कछुए का जीतना .... खरगोश को 'डरपोक भाई' करके चिल्लाना।

शीर्षक - ____________________

एक बड़ा सा जंगल था। उसमें सारे प्राणी मिलजुलकर रहते थे। उनमें एक खरगोश को अपनी तेज चाल पर बड़ा अभिमान था। वह घमंड से कहता फिरता "मैं कितना छोटा हूँ, लेकिन कितना तेज दौड़ता हूँ!" और ऐसे ही एक दिन खरगोश कछुए की धीमी चाल पर बहुत जोर से हँसा और चिढ़ाते हुए कहा, "क्यों

धीमेभाई? आज निकले हो कल पहुँचोगे?"

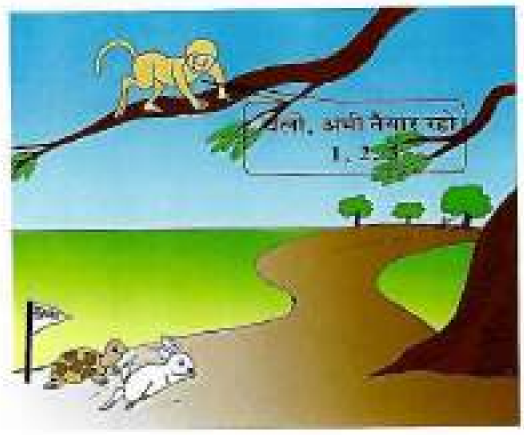

यह सुनकर कछुआ भी गुस्से से लाल-पीला हुआ।

दोनों झगड़ने लगे। इतने में वहाँ एक बंदर आया,

बंदर बोला, "अरे भाई! क्यों झगड़ते हो? कछुए ने

सारी कहानी बतायी। बंदर बोला, चलो दौड़

प्रतियोगिता में देखते है कौन सबसे तेज दौड़ता है?"

दोनों इस बात पर राजी हुए। निर्णायक बंदर पेड़ के ऊपर चढ़ा और दोनों से कहा "देखो, वह पेड़ है वहाँ जो पहले पहुँचेगा वह जीतेगा, मैं यहाँ से देखूँगा। चलो, अभी तैयार रहो। 1.. 2.. 3"

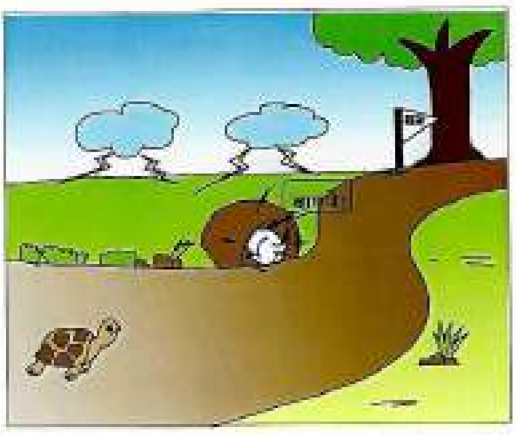

कछुआ और खरगोश की दौड़ प्रतियोगिता शुरु हुई।

थोडी देर बाद अचानक बादल गरजे और जोर की

हवा चलने लगी। तभी पेड़ का एक पत्ता खरगोश

के पीठ पर आकर गिरा। खरगोश को लगा

आसमान फटकर गिर गया। वह डर के मारे नजदीक के एक बिल में घुस गया। यहाँ कछुआ धीमे

लेकिन निरंतर गति से चलता रहा और पेड़ के पास आकर

पहुँचा। थोड़ी देर बाद खरगोश भी वहाँ आया।

आखिरकार कछुआ जीत गया। निर्णायक बंदर ने

कछुए को विजेता घोषित कर दिया। खरगोश का

मुँह देखने लायक हो गया।

सीख- सिर्फ बाहरी रूप देखकर किसी को कम नहीं समझना चाहिए।

कहानी की रुपरेखा और कहानी पढ़ने के बाद कहानी की शुरूवात क्या थी, मुख्य विषय, अंत क्या है और क्या सीख मिली वह लिखो।

* शुरूवात :

* संकट/मुख्य विषय :

* अंत :

* सीख :

* शीर्षक :

II) रूपरेखा के अनुसार कहानी लिखिए। कहानी को उचित शिर्षक दीजिए।

बहुत साल पहले जानवरों की पूँछ ना होना ..... मक्खी, मच्छर से सभी जानवर परेशान होना ..... भगवान को प्रार्थना करना ...... भगवान का प्रसन्न होना .... कल सुबह जल्दी आना, मैं तुम सबको पूँछ दूँगा। .... दूसरे दिन सब जानवरों का समय पर भगवान के पास जाना .... रास्ते में भालू का सो जाना .... भगवान का सब जानवरों को पूँछ देना .... भालु का देर से पहुँचना .... भगवान के पास पूँछ का खत्म होना।

* शुरुवात : ______________________________

* संकट/मुख्य विषय : ______________________________

* अंत : ______________________________

* सीख : ______________________________

* शीर्षक : ______________________________

कहानी –

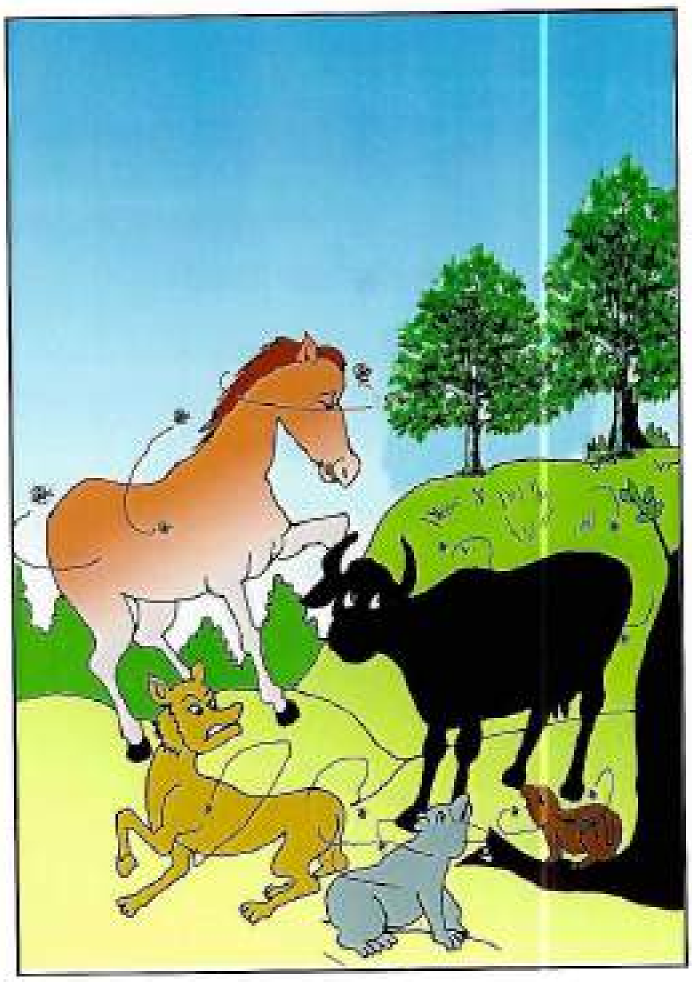

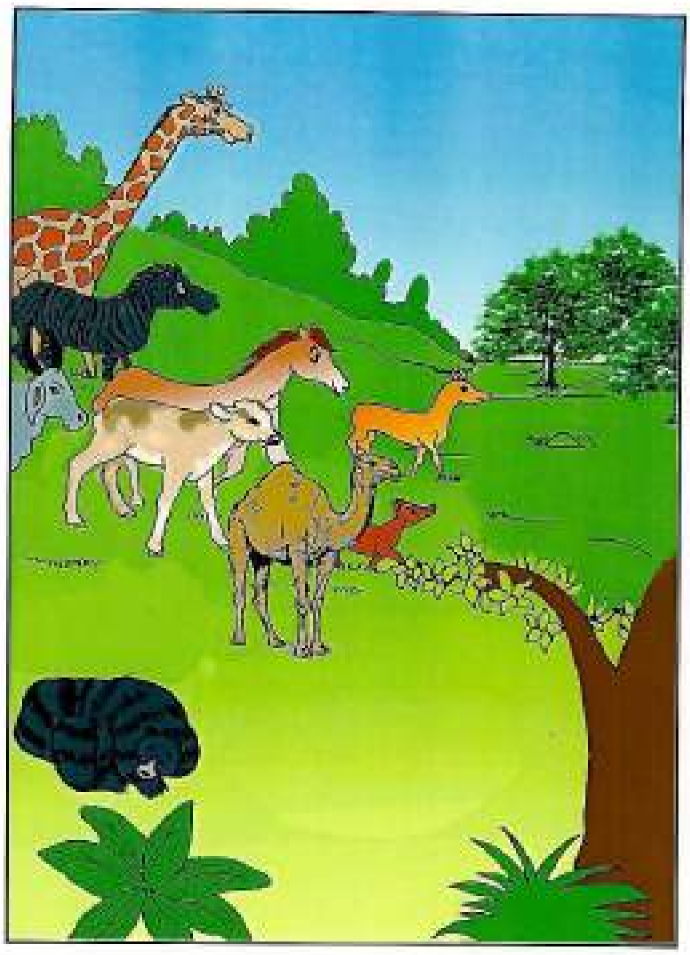

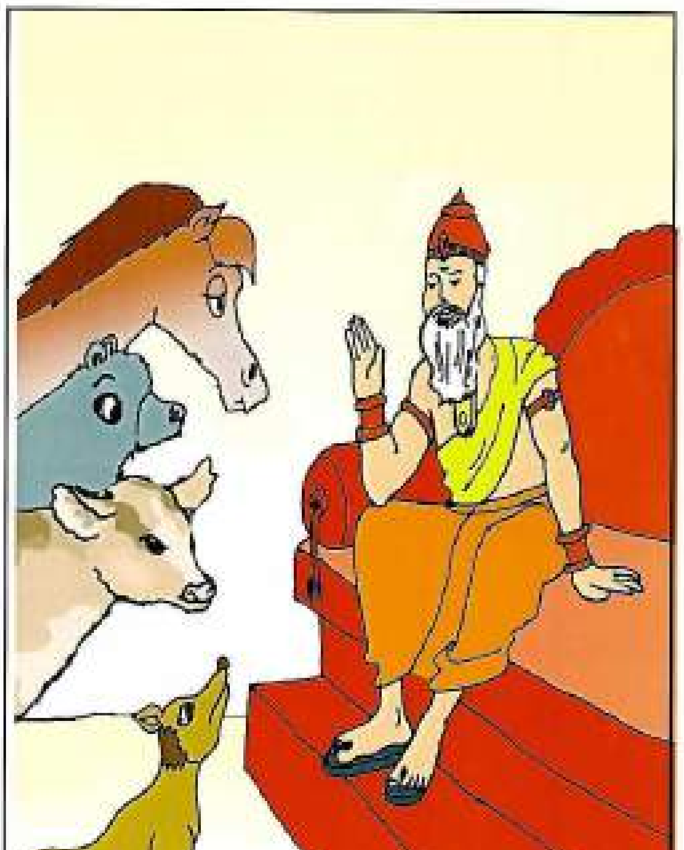

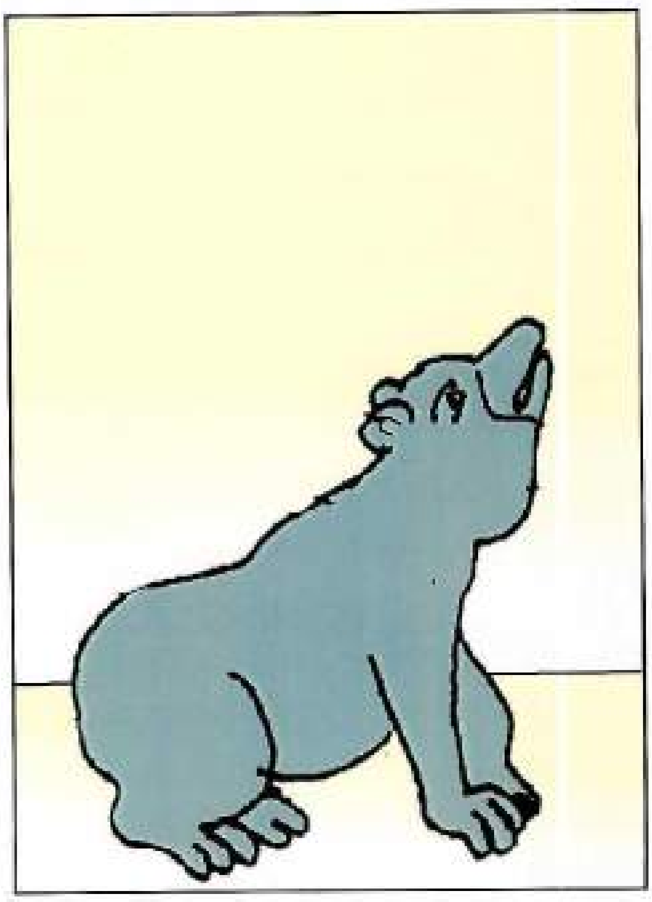

IV) अब आप इस रुपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए और उसे उचित शीर्षक दीजिए।

I) एक लकड़हारा........ चार बेटे........ बेटों को हमेशा आपस में झगड़ना...... एक दिन लकड़हारे का बेटों को अपने पास बुलाना........ एक-एक लकड़ी तोड़ने को देना .... आसानी से लकड़ी तोड़ना .... फिर एक लकड़ी का गट्ठर देना .... तोड़ न पाना .... लकड़हारे का समझाना "एकता में शक्ति"........ बेटों को समझना।

* शुरुवात	:	एक लकड़हारा, चार बेटे, बेटों का हमेशा आपस में झगड़ना,
* संकट/मुख्य विषय	:	एक दिन लकड़हारे का बेटों को अपने पास बुलाना, एक-एक लकड़ी तोड़ने को देना, आसानी से तोड़ना ' बाद में लकड़ी का गट्ठर देना।
* अंत	:	"एकता में शक्ति" बेटों को समझना
* सीख	:	एकता में शक्ति

* शीर्षक :

(ii) एक गाँव में अकाल पड़ना....... दयालु जमीनदार द्वारा रोज लोगों को रोटियाँ बाँटना......... एक बालिका का छोटी रोटी लेना ....घर जाना ....रोटी तोड़ना...... रोटी में सोने का सिक्का पाना....... लड़की का जमीनदार को सिक्का लौटाना .... इनाम पाना।

* शुरुवात :
* संकट/मुख्य विषय :
* अंत :
* सीख :

पाठ 4

सार लेखन

सारलेखन क्या है???

किसी अनुच्छेद (परिच्छेद) अथवा लेख को अत्यंत संक्षेप में **बिना भाव बदले, अपने ही शब्दों** में **लिखने** को सार लेखन कहते हैं। यह एक कौशल है। इस कौशल को विकसित करने के लिए पहले सारग्रहण करने का कौशल होना बहुत जरूरी है।

सार ग्रहण :

सार ग्रहण कैसे करते हैं?

- सार ग्रहण करने के लिए परिच्छेद 2 या 3 बार अच्छी तरह से पढ़े ताकि आपको वह परिच्छेद समझ में आए।

- परिच्छेद में अगर कोई क्लिष्ट वाक्य है या वाक्य बहुत लंबा होने से आपके समझ में नही आता तो, उसमें दिए उपवाक्य को पढ़ो या वाक्य को छोटे-छोटे भाग में पढ़ो। जैसे:

बहुत दिनों से बारिश नहीं हुयी, मगर आज आकाश में घने बादल छाने से ऐसा लगता है कि आज मुसलाधार बारिश होगी और किसान खुशी से झुम उठेंगे।

इस वाक्य को हम छोटे-छोटे पदबंध में पढेंगे। जैसे-

1) बहुत दिनों से बारिश नहीं हुयी,

2) मगर आज

3) आकाश में घने बादल छाने से, ऐसा लगता है कि

4) आज मुसलाधार बारिश होगी

5) और किसान खुशी से झुम उठेंगे।

- परिच्छेद तीसरी बार पढ़ते समय उदाहरण, मुहावरे, कहावतों को रेखांकित करें। ताकि जब आप सारलेखन करेंगे तो आप इन वाक्यों को निकाल सकते हैं।

अब हम सीखेंगे सारग्रहण कैसे करते हैं:

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़िए।

एक साधारण दिखनेवाला 'आम'। जिसका नाम लेते ही हर किसी के मुँह में पानी आता है। हापुस, तोता पुरी, पायरी, रुमाली ऐसे अलग अलग नामोवाला। पका हुआ आम तो सब का प्रिय होता है चाहे जैसे भी खाओ, आमरस बनाओ या दूध में डालकर मिल्कशेक बनाओ।

- जब आप यह परिच्छेद दो-तीन बार अच्छी तरह से पढ़ेंगे, समझेंगे तब आपको पता चलेगा कि इसमें आम फल के बारे में बताया है।

- कुछ वाक्यों में आम का वर्णन किया है जैसे एक साधारण सा दिखनेवाला।
- कुछ वाक्यों में आम के विभिन्न प्रकार बताए हैं, जैसे - तोता पुरी, हापुस, पायरी, रूमाली।
- फिर लोग आम को अलग-अलग तरह से खाते है, इस बारे में बताया है।

सारलेखन करते वक्त हम रेखांकित किये इन उदाहरणों को निकाल सकते है।

आम एक फल जिसका नाम लेते ही हर किसी के मुँह में पानी आता है। एक साधारण सा दिखनेवाला, हापुस, तोता पुरी, पायरी, रुमाली ऐसे अलग अलग नामोवाला। पका हुआ आम तो सब का प्रिय चाहे जैसे भी खाओ, ज्यूस बनाओ, आमरस बनाओ या दूध में डालकर मिल्कशेक बनाओ।

सार लेखन करते समय इस तरह लिखते हैं। जैसे-

आम का नाम लेते ही सबके मूँह में पानी आता है। वो अलग-अलग (विभिन्न) जाती के होते हैं। पका हुआ आम अलग-अलग तरह से खाया जाता है और यह सबको प्रिय है।

गतिविधियाँ :

I) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़िए और सारांश कीजिए।

फूल सुंदर, रंगबिरंगी, आकर्षक! ऐसे कितने ही विशेषण फूलों को लगते हैं। हर एक के पसंद के ये फूल! सजाने के लिए, माहौल को महकाने के लिए और प्रसन्न बनाने के लिए फूलों की जरुरत पड़ती है। कभी तो ये सजते हैं फूलदान में, कभी दरवाजे की चौखट पर, कभी अलग-अलग फूलों से बनती हैं मनमोहक रंगोलियाँ, कभी महिलाओं के जूड़े में गजरे के रूप में, तो कभी इन सबसे ऊपर ईश्वर के गले में माला के रूप में, कभी तो आकर्षक-लुभावने पुष्पगुच्छ के रूप में जो ना केवल नवविवाहित जोड़ों को भेंट दिए जाते हैं, किसी भी समारोह की शान बढ़ाते है।

जितने उपयोग हैं इन फूलों के उतने ही अलग- अलग प्रकार और उनके नाम - गुलाब, गुड़हल, चंपा, चमेली, गेंदा, सुरजमुखी, मोगरा, डेलिया और ऐसेही कितने और! आकर्षक रंगो में, मनमोहक खुशबू में और छोटे-बड़े सुंदर आकार के ये फूल सबको भाते हैं। अब यह परिच्छेद किस बारे में है वह समझो और आप कौनसे वाक्य रेखांकित करेंगे जो कि उदाहरण स्वरूप दिए गए हैं।

अब आप नीचे लिखा हुआ परिच्छेद पढ़ो। हमने इसमें उदाहरण वाले वाक्यों को रेखांकित किया हैं, आप अपने उत्तर से यह परिच्छेद जोड़कर देखे क्या आपका उत्तर और दिया हुआ परिच्छेद समान है?

फूल सुंदर,रंगबिरंगी, आकर्षक! ऐसे कितने ही विशेषण फूलों को लगते हैं। हर एक के पसंद के ये फूल! सजाने के लिए, माहौल को महकाने के लिए और प्रसन्न बनाने के लिए फूलों की जरुरत पड़ती है। कभी तो ये सजते हैं फूलदान में, कभी दरवाजे की चौखट पर, कभी अलग-अलग फूलों से बनती हैं मनमोहक रंगोलियाँ, कभी महिलाओं के जूड़े में गजरे के रूप में, तो कभी इन सबसे ऊपर ईश्वर के गले में माला के रूप में, कभी तो आकर्षक-लुभावने पुष्पगुच्छ के रूप में जो ना केवल नवविवाहित जोड़ों को भेंट दिए जाते है, किसी भी समारोह की शान बढ़ाते हैं। जितने उपयोग हैं इन फूलों के उतने ही अलग-अलग प्रकार-नाम गुलाब, गुड़हल, चंपा,

चमेली, गेंदा, सुरजमुखी, मोगरा, डेलिया और ऐसेही कितने और! आकर्षक रंगों में, मनमोहक खुशबू में और छोटे-बड़े सुंदर आकार के ये फूल सबको भाते हैं।

II) परिच्छेद पढ़िए। इसमें लिखे हुए उदाहरणों, मुहावरों को रेखांकित कीजिए और एक शीर्षक दीजिए।

शीर्षक________________

एक छोटा सा गाँव था। वहाँ एक लड़की रहती थी नम्रता। लगभग आठ-दस साल की होगी। लेकिन थी बड़ी जिद्दी, नटखट, शरारती। गाँवभर के लोगों को कुछ ना कुछ कहकर चिढ़ाती और फिर खूब मजा लेती। कभी किसी को मोटा कह दिया तो कभी किसी को नाटा, कभी चिढ़ाया कहके "शकुनी मामा"। उसकी इसी आदत से सारे लोग बड़े परेशान थे। लेकिन नम्रता को कुछ फर्क नहीं पड़ता। वह किसी की बात नहीं सुनती थी। नाम तो नम्रता था लेकिन व्यवहार में जरा भी नरमी नहीं थी, इसी को तो कहते है आँख का अंधा नाम नयनसुख।

यह परिच्छेद किस बारे में है?

____

III) परिच्छेद पढ़िए। इसमें लिखे हुए उदाहरणों, मुहावरों को रेखांकित कीजिए और उचित शीर्षक दीजिए।

शीर्षक_________________

बहुत पुरानी बात है। एक बहुत ही अमीर सेठ था, सेठ कंजूसमल। नाम की तरह स्वभाव से भी इतना कंजूस था कि पूछो मत। हरदम गरीब लोगों से पैसे ऐठना और पैसे बचा-बचाकर रखना ही मानो उसका काम था। कभी किसी की मदद नहीं करता। एक दिन क्या हुआ? उसका इकलौता बेटा, उसकी आँख का तारा, जो उसकी जान से भी उसे बहुत प्यारा था, वह बहुत बुरी तरह से बीमार पड़ा। फिर क्या दूर-दूर के हकीमों को बुलाया गया, वैद्यों-डाक्टरों को भी बुलाया गया लेकिन लाइलाज। उसकी तबीयत में कुछ सुधार न हुआ। तभी एक बहुत बड़े ज्योतिषी उसके घर आए और गरीबों को अन्न, कपड़े दान करने का उपाय सुझाया। कजूंस अमीर को अपने बेटे के सामने पैसे का कोई मोल नहीं था। उसने तुरंत अपने नौकरों से सामान मँगवाया और खुद गरीबों को दान देने लगा। गाँव के लोगों ने सोचा, कंजूस सेठ और दान, यह कैसे हुआ? यह गंगा उल्टी कैसे बहने लगी? लेकिन जब लोगों को उसके बीमार बेटे के बारे में समझा, सभी ने मिलकर भगवान से उसके बेटे के लिए प्रार्थना की। थोड़े दिन बाद सेठ का बेटा ठीक हुआ.......... शायद उन गरीब लोगों के आशीर्वाद और प्रार्थना से।

यह परिच्छेद किस बारे में है?

____

सारलेखन

पढ़े हुए परिच्छेद को 1/3 में याने संक्षिप्त में लिखना सारलेखन होता है ।

ध्यान रखें-

- परिच्छेद को संक्षिप्त में लिखना मतलब उसे सिर्फ कम करके लिखना नहीं होता, बल्कि संक्षिप्त में लिखते समय परिच्छेद में कही हुई बात स्पष्ट होनी चाहिए। इसलिए भाषा सरल होनी चाहिए।

- सार लेखन लिखते समय यह भी ध्यान रखना जरुरी है कि सब बातें, विचार एक विशिष्ट क्रम में हो। कई बार हम विचारों को क्रम में लिखना भूल जाते है और इससे वह लेखन विचारों को अच्छी तरह से प्रस्तुत नहीं करता और उसका भाव भी बदल सकता है।

- दिए गए परिच्छेद में मुहावरें, कहावतें, उदाहरणों को निकालते समय ध्यान में रखे कि परिच्छेद में लिखे विचारों के अर्थ को बदले बिना उसे संक्षिप्त में लिखना होता है। अब परिच्छेद का सारग्रहण करने के बाद आपने जो वाक्य रेखांकित किए हैं (उदाहरण, मुहावरें, कहावतें) उन्हें संक्षिप्त करके या निकाल करके लिख सकते हैं।

I) **निम्नलिखित परिच्छेद पढ़िए।**

एक जंगल था। जंगल घना और बहुत बड़ा था। जंगल में बहुत सारे पेड़ थे। छोटे-ऊँचे, फल-फूलों के, हरे भरे पेड़ो से जंगल भरा था। कुछ पेड़ बरगद के थे, कुछ नारियल के, कुछ आम के तो कुछ रंगबिरंगी फूलों के। ऐसे फल -फूलों से लदे हुए पेड़ उस जंगल में थे।

इस परिच्छेद का सारलेखन कैसे करें?

- पहले 2/3 बार पढ़िए।
- जानिए किस बारे में परिच्छेद में लिखा है ?
- उदाहरणों, कहावतों को रेखांकित कीजिए।
- इन रेखांकित किए उदाहरणों को छाँट कर परिच्छेद फिरसे लिखिए।

परिच्छेद को 2-3 बार पढ़ने के बाद हमें समझ में आता है कि इस परिच्छेद में जंगल तथा जंगल के पेड़ों का वर्णन किया है। छोटे-ऊँचे, फल-फूलों के, हरे भरे पेड़ों से जंगल भरा था कुछ पेड बरगद के थे, कुछ नारियल के, कुछ आम के कुछ रंगबिरंगी फूलों के। ये वाक्य पेड़ों के बारें में ज्यादा जानकारी देते हैं, पेड़ों का वर्णन करते हैं। इसलिए सार-लेखन लिखते समय हम पेड़ों का वर्णन करते हैं। इसलिए सार-लेखन लिखते समय हम इन वाक्यों को एक या दो वाक्यों में संक्षिप्त कर के लिख सकते हैं। पेडों के उदाहरण स्वरुप दिए नाम आम-नारियल..........के पेड़ यह वाक्य निकाल

देते हैं, और उसके बदले - जंगल अलग-अलग प्रकार के फल-फूलों के पेड़ो से भरा था। यह वाक्य लिख सकते हैं। उसी तरह एक जंगल था। जंगल घना और बहुत बडा था। इन वाक्यों को संक्षेप में लिखते समय एक बहुत बडा और घना जंगल था। ऐसा एक ही वाक्य लिख सकते हैं। ऊपर लिखे हुए परिच्छेद का संक्षिप्त परिच्छेद ऐसा होगाः-

एक बहुत बड़ा और घना जंगल था। जिसमें अलग-अलग प्रकार के फल - फूलों के बहुत सारे पेड़ थे।

- परिच्छेद को संक्षिप्त में लिखने के बाद शीर्षक देना भी जरुरी होता है।

परिच्छेद को शीर्षक कैसे दें?

- शीर्षक छोटा और परिच्छेद से संबंधित होना जरुरी हैं। इसलिए परिच्छेद में आए पात्र, घटना, वस्तु से संबंधित शीर्षक देना चाहिए। जैसे ऊपर दिया हुआ परिच्छेद जंगल के बारे में बताता है इसलिए "एक जंगल" यह शीर्षक देने का विचार कर सकते है। लेकिन सिर्फ 'एक जंगल' ऐसा शीर्षक देने के बजाय परिच्छेद से संबंधित, जुड़ा हुआ विशेषण लगाने पर ताकि दिया हुआ छोटा शीर्षक भी आकर्षक लगेगा।

जैसे - **"एक घना जंगल"।** (एक घना- विशेषण, जंगल-संज्ञा)
"घना जंगल"
"एक हराभरा जंगल"। (एक हराभरा- विशेषण, जंगल - संज्ञा)

1) एक हलवाई था। वह बहुत मोटा और नाटा था। वह इतना मोटा था कि उसे देखकर ऐसे लगता मानो फूला हुआ गोलगोल कद्दू चल रहा हो। इसका नाम भी उसके इस वर्णन को सही ठहराता था, उसका नाम था मोटूराम। वैसे तो मिठाई बनाकर बेचना उसका व्यवसाय था, लेकिन दुकान में बैठे-बैठे आधी से ज्यादी मिठाइयाँ वह खुद खा जाता था। अब आदमी इतना मोटा हो तो उसकी भूख कितनी बड़ी होगी यह तो समझने की बात है।

अब इस परिच्छेद को पढ़ने के बाद हमें यह समझ में आता है, इस परिच्छेद में एक मोटे आदमी का वर्णन किया है। इसमें उसके मोटापे का वर्णन करते समय '<u>वह इतना मोटा था कि उसे देखकर ऐसे लगता मानो फूला हुआ गोलगोल कद्दू चल रहा हो</u>' उदाहरण के तौर पर दिया है। इसलिए सारलेखन करते वक्त हम इन जैसे वाक्यों को नही लिखेंगे।

सारलेखन किया हुआ परिच्छेद:

शीर्षक -____________________

एक बहुत ही मोटा ओर नाटा हलवाई था, नाम था मोटूराम। वह धीरे-धीरे चलता। मिठाईयाँ बनाकर बेचते समय वह बहुत सारी मिठाइयाँ खुद खा जाता। क्योंकि उसे बहुत भूख लगती थी।

अब यह सार-लेखन लिखते समय हमनें दिए हुए परिच्छेद में से कौनसे वाक्य नहीं लिखे हैं,

उन्हे आप ढूँढ़िए और रेखांकित कीजिए।

नीचे लिखे शीर्षको में से आपको कौनसा शीर्षक उचित लगता है, वह लिखिए।

- मोटूराम हलवाईवाला
- एक मोटा और नाटा आदमी
- मोटूराम

____

II) आओ, अब और एक परिच्छेद पढ़ते हैं।

शीर्षक ____________________

रामपूर एक छोटा गाँव था। इस छोटेसे गाँव में सीधे-साधे मेहनती लोग रहते थे। इसी गाँव में रोहन और सोहन रहते थे। नहीं, नहीं, ये दोनो भाई -भाई नही थे बल्कि ये दोनो बहुत अच्छे दोस्त थे। इनकी दोस्ती इतनी गहरी थी दोनो एक दूसरे के लिए कुछ भी कर दें। दोस्ती इतनी पुरानी थी कि सब गाँव में और तो और आस-पास के गाँवों में भी मशहूर थी। लोग कहते , दोस्ती हो तो ऐसी हो!

अब इस परिच्छेद को संक्षिप्त करके दिया है, यहाँ दो संक्षिप्त परिच्छेद है, आपको कौनसा परिच्छेद सही लगता है वह लिखो।

पर्याय 1-एक छोटे से गाँव में मेहनती लोग रहे थे। इस गाँव में रोहन सोहन नाम के बहुत ही अच्छे दोस्त थे। उनकी गहरी और पुरानी दोस्ती देखकर गाँववाले और आस-पास के गाँवो में रहने वाले उनकी दोस्ती की स्तुति करते रहते थे।

पर्याय 2- रामपूर गाँव में रोहन और सोहन बहुत अच्छे दोस्त रहते थे। उनकी दोस्ती बहुत गहरी और पुरानी थी। इसलिए इनकी दोस्ती आसपास के गाँवों में भी मशहूर थी। लोग उनकी दोस्ती को आदर्श मानते थे।

ऊपर लिखे हुए परिच्छेद में से दूसरा परिच्छेद सही है क्योंकि पहले परिच्छेद में उनकी गहरी और पुरानी दोस्ती देखकर गाँववाले और आस-पास के गाँवों में रहने वाले उनकी दोस्ती की स्तुति करते रहते थे। इस वाक्य के बजाय उनकी दोस्ती बहुत गहरी और पुरानी थी और इसलिए उनकी दोस्ती आसपास के गाँवों में भी मशहूर थी। लोग उनकी दोस्ती को आदर्श मानते थे। ये वाक्य उचित लगते हैं।

III) अब एक और परिच्छेद देखते हैं। निम्नलिखित परिच्छेद पढ़िए।

शिक्षा एक माध्यम है जिससे हम अपने आपको शिक्षित कर के अपने विचारों का स्तर ऊँचा कर सकते हैं। उससे अपना जीवन जीने का स्तर ऊँचा कर सकते हैं और उसी के साथ अपने परिवार तथा समाज की जीवन प्रणाली को सुधारकर उच्चतम स्तर पर ला सकते है और साथ ही अपने समाज का सोचने-समझने का दायरा बढ़ा सकते हैं।

शिक्षित होने के साथ हम केवल साक्षर व्यक्ति नहीं बनते बल्कि हम अपने कर्तव्य, जिम्मेदारी और हक से भी वाकिफ होते हैं। एक नागरिक के हैसियत से हम हक लेना तो बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। लेकिन एक नागरिक की जिम्मेदारी, कर्तव्य से हम साफ मुकर जाते हैं। उसी तरह आजकल शिक्षा का संबंध अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी मिलना इससे जोड़ा जाता है और नौकरी भी विदेश में मिले तो जैसे पाँचों ऊँगलियाँ घी में।

हाँ यह बात सही है कि, शिक्षित लोगों को अच्छी नौकरी के अवसर प्रदान करना उस देश की सरकार की जिम्मेदारी होती है। परंतु शिक्षा का मुख्य ध्येय है शिक्षित व्यक्ति पढ़ालिखकर अपने आसपास के अज्ञान के अंधकार को दूर करें, अन्याय के खिलाफ आवाज उठाए, जनजागृती का मंच बनें। ये ध्येय हम कहीं ना कही भूल चुके हैं। शिक्षा के इस ध्येय के अलावा आजकल व्यक्ति यह सोचता है कि वह ज्यादा से ज्यादा पैसे कैसे कमाए? (साधारण तौर से)

शिक्षित व्यक्ति बहुत सारे पैसे तो कमा लेते है लेकिन अपनी सामाजिक जिम्मेदारी , कर्तव्य निभाने से चूँकते हैं। इसलिए आज भी हमें दहेज, अंधविश्वास जैसी बुरी प्रथाओं के खिलाफ जनजागृती की जरुरत पड़ती है। इधर-उधर सार्वजनिक, राष्ट्रीय जगह पर कचरा फेंकना, यहाँ-वहाँ थूँकना, धुम्रपान करना ऐसी छोटी-छोटी बातों के लिए भी हमें शिक्षित व्यक्तियों को सूचना देनी पड़ती हैं, टोकना पड़ता हैं। गंदगी हटाना या कम करना तो दूर की बात है गंदगी बढ़ाने में भी शक्षित लोगों का योगदान कुछ कम नहीं हैं। यह अफसोस की बात हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हमारा समाज सही तरह से शिक्षित हैं? या समाज में रहने वाले लोग सिर्फ साक्षर हैं?

ऊपर दिया गद्यांश पढ़ने के बाद समझ में आता है कि इसमें शिक्षित व्यक्ति के जिम्मेदारियों के बारे में बताया है। दिया हुआ गद्यांश काफी बड़ा है, जिसमें 3 से 4 परिच्छेद है तथा हर एक परिच्छेद में 5-6 वाक्य हैं। इसलिए इस गद्यांश का सारलेखन करते वक्त हम एक-एक परिच्छेद पढ़ेंगे और सारग्रहण करेंगे।

पहला परिच्छेद- शिक्षा एक माध्यम है जिससे हम अपने आपको शिक्षित कर के अपने विचारों का स्तर ऊँचा कर सकते हैं। उससे अपना जीवन जीने का स्तर ऊँचा कर सकते हैं और उसी के साथ अपने परिवार तथा समाज की जीवन प्रणाली को सुधारकर उच्चतम स्तर पर ला सकते है और साथ ही अपने-समाज का सोचने-समझने का दायरा बढ़ा सकते हैं।

पहले परिच्छेद का सारलेखन- शिक्षा के माध्यम से हम अपनी और अपने समाज की जीवन प्रणाली सुधार सकते हैं तथा अपने विचारों का दायरा बढ़ा सकते हैं।

दूसरा परिच्छेद- शिक्षित होने के साथ हम केवल साक्षर व्यक्ति नही बनते बल्कि हम अपने कर्तव्य, जिम्मेदारी और हक से भी वाकिफ होते हैं। एक नागरिक के हैसियत से हम हक लेना तो हम बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। लेकिन एक नागरिक की जिम्मेदारी, कर्तव्य से हम साफ मुकर जाते हैं। उसी तरह आजकल शिक्षा का संबंध अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी मिलना से इससे जोड़ा जाता है और नौकरी भी विदेश में मिले तो सोने पर सुहागा!

दूसरे परिच्छेद का सारलेखन- शिक्षित होने पर हम जिस तरह अपने हक को याद रखते हैं उसी तरह हमें अपनी जिम्मेदारी, कर्तव्य को अच्छी तरह से निभाना चाहिए। क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ विदेश में मिलनेवाली ज्यादा तनख्वाह की नौकरी तक ही सीमित नहीं है।

तीसरा परिच्छेद- यह बात सही है कि शिक्षित लोगों को अच्छी नौकरी के अवसर प्रदान करना उस देश की सरकार की जिम्मेदारी होती है। परंतु शिक्षा का मुख्य ध्येय है शिक्षित व्यक्ति पढ़ लिखकर अपने आसपास के अज्ञान के अंध:कार को दूर करें, अन्याय के खिलाफ आवाज उठाएं, जनजागृती का मंच बनें और ये ध्येय हम कहीं ना कही भूल चूके हैं। शिक्षा के इस ध्येय के अलावा आजकल व्यक्ति यह सोचता है कि वह ज्यादा से ज्यादा पैसे कैसे कमाए?

साधारण तौर से शिक्षित व्यक्ति बहुत सारे पैसे तो कमा लेते है लेकिन अपनी सामाजिक जिम्मेदारी, कर्तव्य निभाने से चूँकते हैं। इसलिए आज भी हमें दहेज अंधविश्वास जैसी बुरी प्रथाओं के खिलाफ जनजागृती की जरुरत पड़ती है।

तीसरे परिच्छेद का सारलेखन- जिस तरह शिक्षित लोगों को नौकरी देना सरकार की जिम्मेदारी है, उसी तरह शिक्षित लोगों की जिम्मेदारी है कि वे अपने आस-पास की बुरी प्रथाओं को कम करें, जनजागृती को बढ़ाए तथा अन्याय के खिलाफ आवाज उठाए।

चौथा परिच्छेद- इधर-उधर सार्वजनिक, राष्ट्रीय जगह पर कचरा फेंकना, यहाँ-वहाँ थूँकना, धुम्रपान करना ऐसी छोटी-छोटी बातों के लिए भी हमें शिक्षित व्यक्तियों को सूचना देनी पड़ती हैं, टोकना पड़ता हैं। गंदगी हटाना या कम करना तो दूर की बात है गंदगी बढ़ाने में भी शिक्षित लोगों का योगदान कुछ कम नहीं हैं। यह अफसोस की बात हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हमारा समाज सही तरह से शिक्षित हैं? या समाज में रहने वाले लोग सिर्फ साक्षर है?

अब आप चौथे परिच्छेद का सारलेखन लिखने का प्रयास करें।

____

____

____

____

(हमने दिए हुए सारलेखन से आपका उत्तर मिलाकर देखे।)

चौथे परिच्छेद का सारलेखन- शिक्षित होने के बावजूद भी लोग अपनी गंदी आदतें (जैसे थूँकना) छोड़ने के बजाए उन्हें बढ़ावा दे रहे हैं। इसलिए हम यह सोचने के लिए मजबूर हैं कि साक्षर होने पर भी क्या हम सुशिक्षित हैं?

गतिविधियाँ :

अब आप निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उसे संक्षिप्त में लिखने का प्रयास करें। उसे उचित शीर्षक दीजिए।

1) एक गाँव था। उसमें एक बूढ़ा किसान था।. वैसे तो किसान था बड़ा ही मेहनती लेकिन अब बुढ़ापे से लाचार था। हल चलाना, जमीन जोतना, बुवाई करना, अब उसके बस की बात नहीं थी। बुढ़ापा अपने साथ साथ बीमारियाँ और कमजोरी भी लाता है। इसी कारण बेचारा किसान इच्छा होने के बावजूद भी काम नहीं कर सकता था। कहने के लिए किसान के चार हट्टे कट्टे जवान बेटे तो थे। लेकिन वे काम काज में बिल्कुल निखट्टे थे। खा-पीकर यहाँ वहाँ घूमना, सोना यही उनका काम था। कहते हैं, ना काम ना काज के दुश्मन अनाज के, बिल्कुल उसी तरह। किसान हर तरह से उन्हे समझा-बुझा चुका था, कभी बहलाकर कभी गुस्सा होकर बात करता, लेकिन उन बेटों पर कुछ असर नहीं करता।

शीर्षक ____________________

सारलेखन -

____

____

____

____

2) जानवरों में सबसे बड़े शरीर, कान वाला हाथी, जिसकी एक बड़ी सूँड़ भी होती है। ऐसे ही एक हाथी की यह कहानी है। वह हाथी जंगल में रहता था। अपनी ही मस्ती में रहता हाथी। झूम-झूमकर चलता हाथी, कभी गन्ने खाता तो कभी खाता मीठे केले। दोपहर के वक्त बहती नदी में डुबकी लगाने जाता था। यह सब करते हुए उसे बड़ा आनंद आता। ऐसा यह मस्तवाल हाथी अपने कामों में खुश रहता था। ऐसे ही एक दिन वह नदी के ठंडे-ठंडे पानी में नहा रहा था कि उसने सुना, "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।" हाथी ने देखा कि बंदर पानी में डूब रहा है, हाथी ने अपनी सूँड से बंदर को उठा लिया। बंदर की जान बचाकर हाथी ने बहुत ही अच्छा काम किया। उस घटना के बाद दोनो बहुत अच्छे दोस्त बन गए।

शीर्षक ____________________

सारलेखन -

____

____

____

____

3) एक छोटासा शहर था। उसमें एक छोटे परिवार में एक लड़की रहती थी नाम था सोनी। उम्र लगभग 10-12 साल की होगी। एक अपघात में उसके पापा की मृत्यू हुई थी। माँ उसकी देखभाल करती थी। साथ में नानी भी रहती थी। बेटी को पिता की कमी का एहसास न हो, दुःख न हो इसलिए बेचारी माँ सोनी पर अपना सारा प्यार न्योछावर करती, उसकी हर जिद पूरी करती। यह सब नानी को पसंद नही था, उसे लगता था इस लाड़ से सोनी बिगड़ जाएगी, और ऐसे ही हुआ सोनी की माँ के अतिरिक्त लाड़-प्यार ने उसे बिगाड़ दिया था। सोनी किसी की एक बात नही सुनती थी। कुछ काम करने के लिए कहने पर वह अपनी भोंहे चढ़ाकर, होठ बाहर निकालकर कहती, "मैं नहीं, जाओ।" उसका यह तरीका किसी को भी पसंद नही आता। एक बार स्कूल से वापस आते वक्त सोनी अपने घर का रास्ता चूक गई । आगे जानेपर उसने देखा एक बूढ़ी औरत कुएँ से पानी निकाल रही है। इस औरत ने सोनी को इशारे से अपने पास बुलाया। बूढ़ी औरत ने सोनी को कुएँ से पानी निकालने में उसकी मदद करने को कहा। सोनी ने अपने स्वभावनुसार उसे वही उत्तर दिया जो वह सबको देती थी, "मैं नहीं जाओ।" फिर बूढ़ी औरत ने उसे पानी का कलसा उठाने में मदद करने के लिए सोनी को कहा। सोनी ने फिर कहा, "मैं नहीं जाओ!" यह सुनकर बुढ़ी औरत ने गुस्से में आकर कहा, "अगर तुम कल तक तुम्हारी इस बात से पछताकर अपनी भूल के लिए भगवान से क्षमा नही मागोंगी तो यह वाक्य तुम्हारे मुँह से बँध जाएगा और फिर तुम कितनी भी कोशिश करोगी तो उसका कुछ भी फायदा नहीं होगा।" सोनी यह शाप सुनकर डर सी गई । वहाँ से तुरंत ही अपने घर गई।

घर पर जाते ही माँ ने कहा, "इतनी देर क्यों हुई? लो तुम ये दो रूपये लो, और टाफी ले आओ" सोनी ने कहा, मैं नहीं, जाओ । लेकिन यह सोनी को कहना नहीं था, उसके मुँह से निकल गया। माँ को भी अचरज हुआ। नानी ने कहा, "चलो मैंने तुम्हारे पसंद के मूली के पराठे बनाए हैं, खा लो।" फिर सोनी ने वही बात कही जो उसे नहीं कहनी थी, "मैं नहीं, जाओ।" यह कहते ही उसे बूढ़ी औरत के शाप की याद आयी और पहली बार उसे अपने इस वाक्य कहने पर दुख हुआ। वह कमरे में जाकर रोने लगी। उसे अपनी गलती का पछतावा हुआ ओर उसके बाद क्या हुआ यह बताने की जरूरत नहीं है? शायद......

शीर्षक ____________________

सारलेखन -

____

____

____

____

4) हमारा देश 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र हो गया था, परंतु हमारे देश का अपना कोई संविधान नही था। 26 जनवरी, 1950 के शुभ दिन हमने अपने देश के लिए संविधान अपनाया। श्री. राजेंद्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने। इसी दिन भारत सर्वप्रभुता संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य बना। और इसी वजह से 26 जनवरी यह दिन हम सब इसे राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते हैं। सभी धर्मों के लोग इसे उत्साह के साथ मनाते हैं। आज हम सब एक नए भारत के निर्माण की ओर बढ़ रहे हैं। जिसमें सभी सुखी होंगे, सबको समान न्याय तथा उन्नति के समान अवसर मिलेंगे। हमारी आजादी विश्व के सभी गुलाम देशों के लिए आजादी की प्रतिक बन गई है।

5) हर एक व्यक्ति को समाज में रहने की जरूरत होती है। समाज में रहकर एक-दूसरे से मेल-मिलाप करके रहना तो बहुत ही स्वाभाविक बात हैं। मेल-मिलाप बढ़ाने के लिए, हमारे संस्कृती को सँभालने के लिए तथा संस्कांरों की धरोहर आगे बढ़ाते रहने के लिए त्योहार बहुत ही परिणामकारक माध्यम हैं। वैसे तो भारत में त्यौहारों की कमी नहीं हैं। कभी होली तो कभी दीवाली, कभी क्रिसमस तो कभी ईद, कभी पोंगल तो कभी दशहरा। और तो और, साल में कम- से-कम तीन दिन राष्ट्रीय त्योहार तो होते हैं - गणतंत्र दिन, स्वतंत्रता दिन और महात्मा गांधी जयंती। इन सभी त्यौहारों को मनाने के लिए एक तरीका हमारे यहाँ बहुत आम है- बड़े आवाजों में गाना बजाना। शादी, सगाई या बारात और त्यौहारों के दिन हम मेहमानों के साथ ध्वनि प्रदूषण को भी आमंत्रित किया जाता है। हमारी परंपरा भी ऐसी हैं कि गणेश जी और दुर्गा माता का स्वागत और बिदाई भी हम पटाखों आवाजों से करते है। उत्सवप्रिय लोग अब शोर प्रिय बन रहे हैं ऐसा करने से हम अपने ही बहरेपन को बुलावा दे रहें है।

शीर्षक __________________

सारलेखन -

____

____

____

____

आओ हिंदी सीखे

* रोचकता से हिंदी भाषा सिखाने के लिए आओ हिंदी सीखे पुस्तक मालिका 3 स्तरों पर उचित क्रम से (जैसे- सरलतम से कठिनतम) की गयी है।

* ये किताबें आकर्षक चित्रों से, मनोरंजक कहानियों से तथा पात्रों से परिपूर्ण हैं, जिससे बच्चा आसानी से एवम् सरलता से हिंदी भाषा सीख पाएगा।

* इसमें दी हुई गतिविधियाँ बच्चों की पढ़ाई हुई संकल्पना स्थिर और दृढ़ करने में प्रयत्न करती हैं।

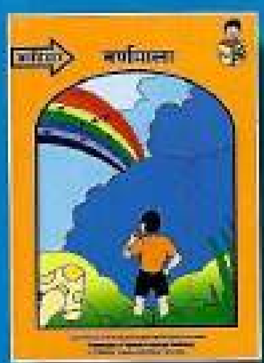

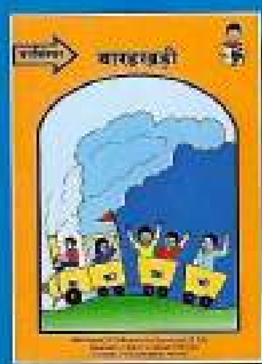

भाग-1 वर्ण संसार

- वर्णमाला
- बारहखड़ी
- संयुक्ताक्षर

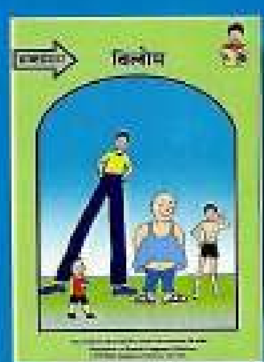

शब्द संसार

भाग -1

- संज्ञा भाग -1
- संज्ञा भाग -2
- संज्ञा भाग -3
- संज्ञा भाग -4
- विलोम

शब्द संसार

भाग -2

- शब्द एक अर्थ अनेक
- अर्थ एक शब्द अनेक
- विशेषण
- अनुप्रासक शब्द
- ऊनार्थक

भाग -3

- क्रिया
- क्रिया काल रूप
- प्रेरणार्थक क्रिया
- शब्द रूप परिवर्तन
- सर्वनाम

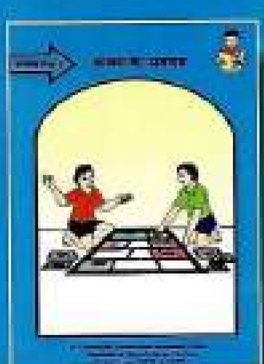

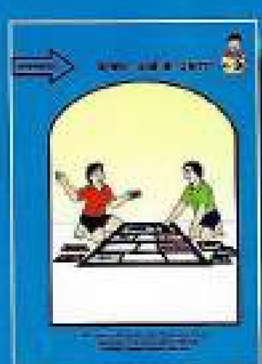

वाक्य संसार

- वाक्य-1 वाक्य के अवयव
- वाक्य-2 रचना के प्रकार
- वाक्य-3 अर्थ के प्रकार
- वाक्य-4 वाच्य के प्रकार
- वाचन और लेखन कौशल्य

* भाषिक वातावरण का निर्माण करके बच्चों में पढ़ने की इच्छा बढ़ाती है।